अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

दस धर्मवृक्ष

श्री 1008 पद्मप्रभ् दिगम्बर जैन मंदिर, अलवर, स्थित पेंटिंग

वीर निर्वाण संवत् - 2536

भाद्र शुक्ल पक्ष वि.सं. 2067 सितम्बर 2010

वर्ष : चार

अंक : तेरह

मूल्य : 10/-

नयन नीर

प्रभु के प्रति किस में?
इसमें..............
प्रीति का वास है
प्रतीति पास है
पर्याप्त है यह,
अब इसकी
नयन-ज्योति
चली भी जाय!
कोई चिन्ता नहीं,
किन्तु
कहीं ऐसा न हो,
...........कि
प्रभु स्तुति से पूर्व
प्रभु नुति से पूर्व
इसके
करुण-नयनों में
नीर कम पड़ जाय

साभार-चेतना के गहराव में

पाठशाला के बच्चों द्वारा णमोकार मंत्र की महिमा नाटक की भव्य प्रस्तुति

भाव विज्ञान की सदस्यता स्वीकारते हुए श्री अकिंत प्रिंस, शाहदरा

समारोह में आशीर्वाद प्राप्त करते हुए प्रिंस शाहदरा दिल्ली के श्री लोकेश एवं अंकित

आचार्य श्री द्वारा रचित साहित्य का विमोचन करते हुए अध्यक्ष दि. पार्श्वनाथ जैन मंदिर, जैकलपुरा, गुड़गांव

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री **डॉ. अजित जैन** 94256 01161

संयुक्त सचिव **अरविन्द जैन, पथरिया** दमोह

कोषाध्यक्ष **इंजी. महेन्द्र जैन**

उपाध्यक्ष **राजेश जैन 'रज्जन'** दमोह

अध्यक्ष **डॉ सुधीर जैन** 9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागडिया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-चार
अंक-तेरह

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य **मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।**

● *परामर्शदाता* ●

डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179

पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●

श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंध सम्पादक* ●

डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
F-108/34, शिवाजी नगर, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●

डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●

पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक	पृष्ठ
1. सबके मंगल का निज मंगल ''सम्पादकीय'' — श्रीपाल जैन 'दिवा'	2
2. सम्यक् ध्यान से निज स्वभाव की उपलब्धि मुनि आर्जवसागर	4
3. गणितसार संग्रह	7
4. आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव डॉ. अजित कुमार जैन	11
5. महावीराष्टक स्त्रोतम् का हिन्दी अनुवाद पं. लालचंद जी	14
6. ज्ञान व विवेक में बड़ा अंतर है डॉ. वीरसागर जैन	16
7. सम्यक ध्यान शतक मुनि आर्जवसागर	19
8. जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा डॉ. संजय जैन	20
9. बारह मंगल भावना श्रीपाल जैन 'दिवा'	25
10. युवा पीढ़ी को सुसंस्कारित करें महेन्द्र जैन 'जगत'	26
11. विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका कु. आराधना जैन	28
12. समाचार	30
13. प्रश्नोत्तरी	36

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

सबके मंगल में निज मंगल

- श्रीपाल जैन 'दिवा'

वर्षा ऋतु धरती की तपन को शांत कर धन्य होती है। जीव मात्र आनन्द की अनुभूति से अभिभूत हो जाते हैं। साथ ही अनंत दृश्य-अदृश्य जीव राशि उत्पन्न हो जाती है। जिनमें अनन्त जीव राशि को आँखों से देखा भी नहीं जा सकता है। उस दृश्य-अदृश्य जीव राशि की रक्षा के लिए साधु मुनि वर्षा के चार माह एक स्थान, गाँव, नगर, मंदिर, धर्मशाला में ठहर कर साधना करते हैं। यह समय चातुर्मास-वर्षावास के नाम से जाना जाता है। चातुर्मास मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका, के तप-साधना करने का महान उत्सव के रूप में होता है। तप के ताप से आत्म शुद्धि में वृद्धि की जाती है जिससे चित्त की एकाग्रता से ध्यान का अभ्यास करने का सुअवसर उपलब्ध होता है। स्वाध्याय स्वयं का, स्वयं में रमने का/लीन होने, का स्वर्णिम अवसर होता है। मुनि आर्यिका के मार्ग दर्शन में श्रावक-श्राविका अपनी साधना करते हैं।

चातुर्मास में श्रावक-श्राविका का उत्साह व धर्म के पालन के प्रति लगाव में अभूतपूर्व वृद्धि हो जाती है। अपने सांसारिक कार्यों में आसक्ति को कम करते हुए उपवास-ध्यान-तप-आहार दान आदि प्रशस्त शुभ क्रियाओं में अपने समय का सदुपयोग करते हैं। जिससे स्वयं की आत्म विशुद्धि के साथ साधु की साधना-तप-ध्यान-स्वाध्याय करने में अबाधितता बनी रहे। चातुर्मास अवधि में सोलहकारण व्रत व पर्युषण पर्व ये महान पर्व भी आते हैं। सोलहकारण व्रतों में उपवास का बड़ा महत्व है। अपनी आत्मा के पास बैठने का अपनी आत्म विशुद्धि के क्षणों को जीने का सुअवसर मिलता है। मन के विकारों, विभावों व कषायों से दूरी बनाने के पल, जो अपनी आत्मा के विशुद्ध स्वरूप के पास पहुँचने में सहयोग करते हैं। मन की विशुद्धि से ही आत्म-विशुद्धि में वृद्धि होती है। सोलहकारण व्रतों में यह अभ्यास करने का अवसर हमें प्राप्त होता है।

सोलहकारण व्रतों में वचन शुद्धि पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। हित-मित-प्रिय वचन ही सत्य हो सकते हैं। इसकी साधना भी कठिन नहीं तो सरल भी नहीं है। हमारे सत्य वचन के कहने के ढंग से भी किसी की आत्मा को वेदना हो गई तो वह सत्य वचन भी असत्य के समान घातक हो जाता है।

काय शुद्धि बाह्य शुद्धि से सम्बन्ध रखती है। पर, सभी को काय शुद्धि का पूरा ज्ञान-ध्यान होना चाहिए। आत्म शुद्धि की वृद्धि में काय शुद्धि का भी योगदान रहता है। सोलह कारण व्रतों में काय शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आत्म साधना में काय शुद्धि साधक है। सोलह कारण व्रतों पर सभी साधु श्रावकों को मार्गदर्शन देकर उन्मुख करते हैं। परन्तु परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी के परम प्रभावक

शिष्य पू. मुनि श्री आर्जवसागर जी ने इन व्रतों की ओर ज्यादा ध्यान देकर श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित किया है। इनके मार्गदर्शन में हर चातुर्मास में सैकड़ों धर्म प्रेमी सोलहकारण एवं दशलक्षण व्रतों का पालन बड़ी श्रद्धा से करते हैं।

प्रतिवर्ष प्रति चातुर्मास में पर्युषण पर्व सम्पूर्ण आर्यदेश में जैन बन्धु मनाते हैं। वे तीर्थंकरों के बताये इन दस धर्मों के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं। वे धर्म को मानते हैं पर अधिकांश धर्म 'की' नहीं मानते। धर्म 'की' अर्थात् धर्म की कहीं बात को नहीं मानते। जानते हैं पर मानते नहीं। परन्तु वर्तमान में साधुओं के सत्संग में जैन बन्धु उस ओर उन्मुख हो रहे हैं। वे धर्म को मानने के साथ धर्म 'की' भी मान रहे हैं। तीर्थंकरों के धर्म 'की' बात मानने में साधुओं का सत्संग ही कार्यकारी है। अज्ञान अंधकार से मुक्त आँखों को खोलने का काम ज्ञानवान साधु ही कर सकते हैं। यह काम पर्युषण में सुनियोजित ढंग से साधु-श्रावक करते-कराते हैं।

पर्युषण पर्व क्षमा के आकाश में उड़ान भरता है और सभी को संयम-तप-त्याग की यात्रा करवाता हुआ क्षमा के आकाश के स्थानक में लाकर छोड़ता है। उस आकाश की यात्रा का आनन्द आप सब ले चुके हैं फिर भी भाव विज्ञान परिवार आप सभी सुधी सज्जनों से हृदय से क्षमा याचना करता है और आप सबको भी क्षमा करता है। कहा तो यहाँ तक गया है कि क्षमा शील को ही मोक्ष होता है क्योंकि क्षमा के बिना धर्म, दीक्षा का प्रारम्भ ही नहीं है। इस अर्थ से हम सभी मोक्ष के चाहने वाले हैं।

सबके मंगल में निज मंगल, निज मंगल में सबका मंगल ।

क्षमावाणी कैसे मनायें?

क्षमा भाव का पर्व मनाने, पहले सबको क्षमा करें ।
फिर हम माँगे क्षमा सभी से, मन में निर्मल भाव धरें।।
क्षमा नहीं जो करे शत्रु को, नहीं क्षमा है कहलाती।
कषाय भावना इस जगत में, वैरभाव को उपजाती ॥100॥

क्षमा मात्र कहने से प्राणी, नहीं क्षमा वाणी होती ।
नहीं रखेंगे बैर कभी हम, यही धर्म की है रीती ।।
सारे जग में प्रेम बढ़े नित, नहीं किसी में भेद रहे।
सुखी रहें सब धर्मी-जन ये, नहीं किसी को खेद रहे ॥101॥

''धर्मभावना शतक'' से साभार
मुनिश्री आर्जवसागर द्वारा रचित

सम्यक् ध्यान से निज स्वभाव की उपलब्धि

प्रवचन - मुनिश्री आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

सद्धर्म बन्धुओं,

हम सब लोग अपने ध्यान को निर्मल बनाते हुये अन्तस् की यात्रा करने हेतु पुरुषार्थसह प्रयत्नशील हैं। समीचीन ध्यान आत्मा को निर्मल, पावन, पुनीत बनाता है यह सब जानते हैं और ये अनुभव की बात है। जो हम करना चाहते हैं वह सम्यक् ध्यान; जब हम बाहर से सब चीजें भूल जायेंगें; नो अटेचमेन्ट रूप अवस्था होगी तभी हमारी शक्ति (ऊर्जा) जो बाहर की ओर बह रही है वह अन्तस् की ओर बहेगी और वह शक्ति इतनी पावरफुल होगी कि चारों ओर से जो हमारे मन को चलायमान करने वाले पदार्थ वह विषयों की लहर अपने आप थम करके हमें बाधा उत्पन्न करने में सक्षम नहीं हो पायेगी। एक एयरडोर के समान हमारी एनर्जी हमारी रक्षा करेगी। मकान में खिड़कियाँ होती हैं। चारों तरफ से खिड़कियाँ खुली हों तो हवा आती है और कभी तूफान आता है, कभी धूल आती है, कभी किसी की आवाज आती है इसलिए मकान के अन्दर स्थित व्यक्ति का मन चलायमान हो जाता है, अस्थिर होता है, बाधित होता है। जब चारों तरफ से खिड़िकियों को बन्द कर देते हैं तो चलायमान करने वाली, वह जो वस्तु है, बाधित तत्त्व है उसका निरोध हो जाता है। इसी तरह से कोई जल तालाब का हो या कुए का हो अथवा कोई बड़े बर्तन में हो तो हवा के झोंकों से वह तरंगायित होता है। तरंगें उठती हैं तो आप देखते हैं उस जल में अपने मुख को आप नहीं देख पाते हैं और उसके सामने अपना मुख करेंगे तो अपना मुख नहीं दिखता है। कारण वह तरंगायित है। जब उन वायु के झोंकों का रुकना होता है तब स्थिर हुये उस जल में आपको अपना मुख दिखने लग जाता है। स्थिरता आती है तो सही-सही अवलोकन प्रारम्भ होता है। ऐसे ही अपनी आत्मा में अपना दर्शन करना हो तो अन्तस् का दर्शन करते हुए शान्ति सुख का अनुभव करना हो, निर्विकल्प होना है तो हमें क्या करना पड़ेगा? हमारी आत्मा में जो लहरा रहा है शान्ति सुख का सरोवर, सुख का सागर लेकिन तरंगायित है इसलिए शान्ति सुख का अनुभव नहीं होता अपना दर्शन नहीं होता विकल्प उठते रहते हैं। विकल्प को उत्पन्न करने वाली वह विषयों की हवा, राग, द्वेष के तूफान निज अन्तस् को झकझोर देते हैं। उन तरंगों के माध्यम से हम परेशान हो जाते हैं। शान्ति सुख का अनुभव नहीं कर पाते हैं। उन तरंगों को रोकने के लिए हमें क्या करना पड़ता है? स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत ये पाँच इन्द्रियाँ विषयों को ग्रहण करती हैं। स्पर्शनेन्द्रिय अच्छा-अच्छा स्पर्श चाहती है स्पर्श में राग-द्वेष करती है। रसना इन्द्रिय अच्छा-अच्छा चखना चाहती है। घ्राण इन्द्रिय अच्छा-अच्छा सूंघना चाहती है। चक्षु इन्द्रिय अच्छा-अच्छा देखना चाहती है। कर्ण

इन्द्रिय अच्छा-अच्छा सुनना चाहती है मधुर-मधुर संगीत, प्रशंसा के शब्द उसे अच्छे लगते हैं। पाँचों ही इन्द्रियाँ अपने विषयों को चाहती हैं। इन विषयों के ग्रहण से अपनी आत्मा में विकल्पों की तरंगें उत्पन्न हो जाती हैं। ये अच्छा है, बुरा है, राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह ये दोष आत्मा में उत्पन्न हो जाते हैं और अपनी आत्मा की एनर्जी बाहर की ओर बह जाती है। ये विषय और शारीरिक इन्द्रियाँ ये सब बाहरी चीजें हैं और उसके सम्बन्ध में होने वाले राग, द्वेष परिणाम या भाव विभाव रूप हैं स्वभाव नहीं है। स्वभाव क्या है और विभाव क्या है? इसको जानना पड़ेगा। जल में शीतलता क्या है? स्वभाव है। जल में उष्णता क्या है? विभाव है। अग्नि का स्वभाव क्या है? उष्णता। दूध का स्वभाव शीतलता है। मान लीजिए दूध गरम हो गया या दूध उबल रहा है उबलते समय आप सोचते हैं ये उबलना बंद हो जाय क्योंकि ये इसका विभाव है। अगर उस पर कोई छीटें डालता है तो उबलना कुछ क्षण के लिए बंद हो जाता है। लेकिन उष्णता अभी भी बनी रहती जो उसका विभाव है वह तात्कालिक है। अपने अन्दर शान्ति और सुख स्वभाव है और ये राग-द्वेष आदि विभाव हैं। विभाव तात्कालिक होते हैं और स्वभाव त्रैकालिक होता है। लेकिन आप कहेंगे कि हमें अनुभव में तो आ नहीं रहा है अनुभव में तो क्रोधादि कषाय ही आ रहे हैं। वह स्वभाव कहाँ चला गया? हे भगवन्! आप दे दीजिए, महाराजजी आप बता दीजिए स्वभाव कहीं मिल जाय तो हम ले लें तो भैया! ये दिखने की चीज नहीं है। विभाव है तो स्वभाव कहाँ गया? स्वभाव गया कहाँ गया छुप..... गया बाहर नहीं गया छुप गया तो अन्दर में तो है। लेकिन ढक गया है दूध का स्वभाव अग्नि के निमित्त से तो देखने में नहीं आता। जैसे मेघ आ जाते हैं तो सूर्य का प्रकाश ढक जाता है लेकिन प्रकाश कहीं नहीं गया छुप गया। ज्यों ही मेघ हट जाते हैं तो स्वभाव अपने आप प्रकट हो जाता है। बाहरी पदार्थ अपने स्वभाव के लिए बाधक बनते हैं और आगम का ज्ञान, देव, शास्त्र, गुरु, उनका सत्संग और अपना पुरुषार्थ, अपना ध्यान अपनी धारणायें ये सब अपने स्वभाव को उद्घाटित करने में सहायक बनते हैं। अब हमें क्या करना पड़ेगा? अब हमें ऐसी चीज का आलम्बन लेना पड़ेगा जिसका आलम्बन लेने से अपना स्वभाव प्रकट हो जाय और हमारा पुरुषार्थ जागृत हो जाय। उस विभाव को हटाने में और विभाव जिन साधनों से या जिन कारणों से होता है उसको हटाने में समर्थ हो जाय। जैसे अग्नि को हटाना है तो पुरुषार्थ करना पड़ेगा तब कहीं दूध का छुपा हुआ स्वभाव बाहर आयेगा। हमारी आत्मा के स्वभाव को हमें अनुभव में लाना है तो क्या करना पड़ेगा? विभाव के कारण स्वरूप पदार्थों को दूर करना पड़ेगा या तुम दूर हो जाओ बात एक ही है। अग्नि को हटाने से दूध और पानी अपने आप स्वभाव में आ जाता है। वैसे ही हमें अपने स्वभाव की प्राप्ति करने के लिए संयोग को छोड़ना पड़ेगा। संयोग में सबसे बड़ी चीज है पुद्गल या परिग्रह और संयोग-वियोग का जोड़ा है। जो-जो वस्तु बाहर से आयी है उसका वियोग जरूर होगा। आप छोड़ें या ना छोड़ें लेकिन वह जरूर छूटेगा। छूटेगा तो आप को दुःख होगा और छोड़ेंगे तो सुख होगा। अपनी आत्म कल्याण की भावना से विभाव की दृष्टि से आप उन संयोगों को छोड़ोगे तो आनन्द

की अनुभूति होगी। और कर्म निर्जरा का भी अवसर मिलेगा। फिर पुनः आप उससे नहीं जुड़ेंगे और न वह जुड़ेगा कारण कि आपने उसको अन्तस् से छोड़ा है, जान करके छोड़ा है, ज्ञान करके छोड़ा है, परिणाम को पहचान करके, स्वभाव को जान करके छोड़ा है उससे आपको ग्लानी हुई है तब तो सवाल ही नहीं है। बस इस संयोग या परिग्रह से ही व्यक्ति पंच पाप करता है, कषाय करता है, मोह, राग, द्वेष करता है बस यही एक मात्र कारण है। इसी के पीछे हैं सब; जो दिख रहा है उसके प्रति मोह लगा हुआ है। ''मूर्छा परिग्रहः'' दिखने मात्र से कोई परिग्रह नहीं हो गया तुमने उसको अपना समझा बस तव-मम, तव-मम, मेरा-तेरा, तेरा-मेरा में है। मेरा नहीं है तो तेरा भी नहीं है। जहाँ मेरा आयेगा वहाँ तेरा भी आ जाता है। तेरा, मेरा में ही परिग्रह है। ''मूर्छा परिग्रहः'' का अर्थ यह है कि जो दशों ओर से आत्मा को मूर्छित करता है, अपने स्वभाव से जो दूर करता है वही है परिग्रह। जब तक यह विभाव रूप परिग्रह रहेगा तब तक आत्मा के स्वभाव की प्राप्ति नहीं होगी। इसलिए तो कहते हैं कि सच्चा सुख कहाँ है? आप लोग पढ़ते ही हैं छोटे-छोटे शास्त्रों में। जैसे छहढाला में कहते हैं कि -

आत्म को हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिव माहिं न तातैं शिवगम लाग्यौ चहिये ।।

(आतम को हित है सुख) आत्मा का हित सुख है। (सो सुख) वह सुख (आकुलता बिन कहिये) आकुलता से रहित है। आकुलता कहाँ नहीं है? जहाँ-जहाँ परिग्रह है वहाँ आकुलता है उसकी सम्हाल की इच्छा, रखने की, लाने, भोगने की इच्छा है। (आकुलता शिव माहिं न) आकुलता मोक्ष में नहीं है क्योंकि वहाँ परिग्रह नहीं है, संयोग नहीं है। (तातैं) इसलिए अगर आपको वह सुख पाना है तो (शिवमग लाग्यो चाहिये) मोक्षमार्ग पर लग जाना चाहिए। देखिये दो पंक्तियों में पूरा सार कह दिया। संयोग है तो वियोग नियत है। बाहर जो दिख रहे हैं पदार्थ उसका वियोग इसी जन्म में हो जाता है। आप नहीं छोड़ पाते हैं तो मरण के बाद अपने आप छूट जायेगा तब दुःख होगा। अब देख लीजिए आप; आपके जेब में पैसा है दान में दे दिया तो सुख है और दे नहीं पाये, जेब कट गया तो दुःख होता है। छोड़ने में सुख और छूटने में दुःख होता है। एक व्यक्ति ने उपवास कर लिया आज चारों प्रकार के आहार का त्याग है आज कुछ नहीं खाना ऐसा जिसने सोच लिया उसका मुख देखो तो बहुत प्रसन्न है ऐसा लग रहा है कि उसने भोजन भरपूर ही कर लिया हो और एक ने एक-दो घण्टे तक बनाया, आधा-एक घण्टे तक खाया और बाहर निकल गया उल्टी हो गयी उसका मुख देखो कैसा लग रहा है? इतना अंतर है छोड़ने में और छूटने में। अब आप लोग सोच लो हमें क्या करना है? अगर हम छोड़ेंगे-छोड़ेंगे कहते रहे और बीच में ही आत्मा निकल गयी तो क्या करेंगे? परिग्रह से मोह करते रहें छूट गया तो दुःख हुआ। लेकिन कुछ ज्ञानी लोग उस समय भी सम्हल जाते हैं। छोड़ने के भाव जब हुये तभी छोड़ देते हैं। और शान्ति सुख के मार्ग से अपनी मंजिल भी पा लेते हैं यही है स्वभाव प्राप्ति का मार्ग ।

क्रमशः ......

महावीराचार्यप्रणीतः

गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

१. संज्ञाधिकारः

नारकाणां च सर्वेषां श्रेणीबन्धेन्द्रकोत्कराः । प्रकीर्णकप्रमाणाद्या बुध्यन्ते गणितेन ते ॥१४॥
प्राणिनां तत्र संस्थानमायुरष्टगुणादयः । यात्राद्याः संहिताद्याश्च सर्वे ते गणिताश्रयाः ॥१५॥
बहुभिर्विप्रलापैः किं त्रैलोक्ये सचराचरे । यत्किंचिद्वस्तु तत्सर्वं गणितेन विना न हि ॥१६॥
तीर्थकृद्भ्यः कृतार्थेभ्यः पूज्येभ्यो जगदीश्वरैः । तेषां शिष्यप्रशिष्येभ्यः प्रसिद्धाद्गुरुपर्वतः ॥१७॥
जलधेरिव रत्नानि पाषाणादिव काञ्चनम् । शुक्तेर्मुक्ताफलानीव संख्याज्ञानमहोदधेः ॥१८॥
किंचिदुद्धृत्य तत्सारं वक्ष्येऽहं मतिशक्तितः । अल्पं ग्रन्थमनल्पार्थं गणितं सारसंग्रहम् ॥१९॥
संज्ञाम्भोभिरथो पूर्णे परिकर्मोरुवेदिके । कलासवर्णसंरूढलुठत्पाठीनसंकुले[7] ॥२०॥
प्रकीर्णकमहाग्राहे त्रैराशिकतरङ्गिणि । मिश्रकव्यवहारोद्यत्सूक्तिरत्नांशुपिञ्जरे ॥२१॥
क्षेत्रविस्तीर्णपाताले खाताख्यसिकताकुले । करणस्कन्धसंबन्धच्छायावेलाविराजिते ॥२२॥
गुणकैर्गुणसंपूर्णैस्तदर्थमणयोऽमलाः । गृह्यन्ते करणोपायैः सारसंग्रहवारिधौ ॥२३॥

अथ संज्ञा

न शक्यतेऽर्थो बोद्धुं यत्सर्वस्मिन् संज्ञया विना । आदावतोऽस्य शास्त्रस्य परिभाषाभिधास्यते ॥२४॥

१ KMB बद्धे० । २ M वसु । ३ KP ज्ञान के स्थान में नव । ४ MB अल्प० । ५ K संज्ञातोयसमा० ।
६ M द्ध (सम्भवतः त्थ को लिखने में भूल हुई है ।) ७ MB संकटे । ८ P द्य ।

(श्रेणिरहित) निवास-स्थानों के माप और अन्य सब प्रकार के विभिन्न माप—सभी गणित के द्वारा जाने जाते हैं ॥१३–१४॥ उन स्थानों में रहने वाले जीवों के संस्थान, आयु, उनके आठ गुण आदि, उनकी गति (यात्रा) आदि, उनका साथ रहना आदि, इन सबका आधार गणित है ॥१५॥ और व्यर्थ के प्रलापों से क्या लाभ है ? जो कुछ इन तीनों लोकों में चराचर (गतिशील और स्थिर) वस्तुएँ हैं उनका अस्तित्व गणित से विलग नहीं ॥१६॥ मैं, तीर्थ को उत्पन्न करने वाले, कृतार्थ और जगदीश्वरों से पूजित (तीर्थङ्करों) की शिष्य प्रशिष्यात्मक प्रसिद्ध गुरु परम्परा से आये हुए संख्याज्ञान महासागर से उसका कुछ सार एकत्रित कर, उसी तरह, जैसे कि समुद्र से रत्न, पाषाणमय चट्टान से स्वर्ण और शुक्ति (oyster shell) से मुक्ताफल प्राप्त करते हैं, अल्प होते हुए भी अनल्प अर्थ को धारण करने वाले सारसंग्रह नामक गणित ग्रंथ को अपनी बुद्धि की शक्ति के अनुसार प्रकाशित करता हूँ ॥१७-१८-१९॥ तदनुसार, इस सारसंग्रह के सागर से, जो पारिभाषिक शब्दावलि रूपी जल से परिपूर्ण है और जिसकी आठ गणित की क्रियायें किनारे रूप हैं; पुनः जो भिन्न की क्रियाओं रूपी निर्भय गतिशील मछलियों से युक्त है और विविध प्रश्नों के अध्यायरूपी महाग्राह (मगर) से व्याप्त है; पुनः जो त्रैराशिक की अध्यायरूपी लहरों से आंदोलित है और मिश्र प्रश्नों के अध्याय-सम्बन्धी उत्कृष्ट भाषारूपी मोतियों की आभा से रंजित है, और पुनः जो क्षेत्रफल-सम्बन्धी प्रश्नों के अध्याय द्वारा पाताल तक विस्तृत है तथा घनफल के अध्याय रूपी रेत से पूर्ण है; और जो ज्योतिर्लोकीय व्यावहारिक गणना से सम्बन्धित छाया-सम्बन्धी अध्याय रूपी बढ़ते हुए ज्वार से चमकता है—(ऐसे ज्ञानसागर से) सम्पूर्ण गुण सम्पन्न गणितज्ञ गणित की सहायता से अपनी इच्छानुसार निर्मल मोती प्राप्त कर सकेंगे ॥२०–२३॥ इस विज्ञान के आरम्भ में आवश्यक पारिभाषिक शब्दावलि दी जाती है क्योंकि बिना शुद्ध परिभाषाओं के विषय तक पहुँच सम्भव नहीं है ॥२४॥

तत्र तावत् क्षेत्रपरिभाषा

जलानलादिभिर्नाशं यो न याति स पुद्गलः । परमाणुरनन्तैस्तैरणुः सोऽत्रादिरुच्यते ॥२५॥
त्रसरेणुरतस्तस्माद्रथरेणुः शिरोरुहः । परमध्यजघन्याख्यौ भोगभूकर्मभूभुवाम् ॥२६॥
लीक्षा तिलस्स एवेह सर्षपोऽर्थ यवोऽङ्गुलम् । क्रमेणाष्टगुणान्येतद्व्यवहाराङ्गुलं मतम् ॥२७॥
तत्पञ्चकशतं प्रोक्तं प्रमाणं मानवेदिभिः । वर्तमाननराणामङ्गुलमात्माङ्गुलं भवेत् ॥२८॥
व्यवहारप्रमाणे द्वे राद्धान्ते लौकिके विदुः । आत्माङ्गुलमिति त्रेधा तिर्यक्पादः षडङ्गुलैः ॥२९॥
पादद्वयं वितस्तिः स्यात्ततो हस्तो द्विसङ्गुणः । दण्डो हस्तचतुष्केण क्रोशस्तद्द्विसहस्रकम् ॥३०॥
योजनं चतुरः क्रोशान्प्राहुः क्षेत्रविचक्षणाः । वक्ष्यतेऽतः परं कालपरिभाषा यथाक्रमम् ॥३१॥

अथ कालपरिभाषा

अणुरण्वन्तरं काले व्यतिक्रामति यावति । स कालः समयोऽसंख्यैः समयैरावलिर्भवेत् ॥३२॥

१ KP णु । २ MB न० । ३ PB ख्य । ४ P धि । ५ M ऽन्ये ।

क्षेत्र परिभाषा [क्षेत्रमाप सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि]

पुद्गल का अनन्तवाँ सूक्ष्म वह भाग जो न तो पानी द्वारा, न अग्नि द्वारा और न अन्य किन्हीं ऐसी वस्तुओं द्वारा नाशको प्राप्त है, परमाणु कहलाता है । ऐसे अनन्त परमाणुओं द्वारा उत्पन्न एक-एक अणु क्षेत्रमाप में प्रथम माप है । इससे उत्पन्न क्रमशः आठ-आठ गुणे त्रसरेणु, रथरेणु, बालमाप, जूं माप, तिल या सरसों माप, यव माप तथा अंगुल माप हैं । अंगुल माप आदि उनके लिये हैं जो भोग-भूमि और कर्मभूमि में उत्पन्न होते हैं । ये उत्कृष्ट, मध्यम, जघन्य प्रकार के होते हैं । यह अंगुल व्यवहारांगुल भी कहलाता है ॥२५–२७॥ जो माप की विधियों से परिचित हैं, कथन करते हैं कि इस व्यवहार-अंगुल का ५०० गुणा प्रमाणांगुल होता है । वर्तमान काल के मनुष्यों की अंगुली का माप आत्मांगुल कहा जाता है ॥२८॥ वे कहते हैं कि संसार के स्थापित व्यवहारों में अंगुल तीन प्रकार का होता है, प्रथम व्यवहारांगुल, द्वितीय प्रमाणांगुल और तृतीय उनका आत्मांगुल । छः अंगुल मिलकर पाद-माप बनता है जो आरपार रूप से नापा जाता है ॥२९॥ दो ऐसे पाद मिलकर वितस्ति बनाते हैं और दो वितस्ति मिल कर एक हस्त बनता है । चार हस्त से एक दण्ड बनता है और दो हजार दंड मिलकर एक क्रोश बनता है ॥३०॥ जो क्षेत्रफल के मापज्ञान में सिद्धहस्त हैं, कहते हैं कि चार क्रोश मिलकर एक योजन होता है ॥३१॥ इसके पश्चात्, मैं समय के माप के सम्बन्ध में क्रमवार पारिभाषिक शब्दावलि का उल्लेख करता हूँ ।

काल-परिभाषा [काल-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि]

वह काल जिसमें एक (गतिशील) अणु[1] किसी प्रदेशबिन्दु से दूसरे निकटतम प्रदेशबिन्दु तक जाता है समय कहलाता है । असंख्य समय मिलकर एक आवलि बनती है ॥३२॥

(२५–२७) क्षेत्रमाप-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि को स्पष्ट रूप से समझने के लिये परिशिष्ट ३ देखिये ।

अणु से आठ गुना त्रसरेणु, त्रसरेणु से आठगुना रथरेणु, रथरेणु से आठगुना बाल्माप इत्यादि जो माप वर्णित किये गये हैं । वे क्रमवार ऐसे हैं कि प्रत्येक पूर्वानुगामी माप से आठगुना है; तथा प्रत्येक उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य प्रकार का है ।

१ यहाँ अणु का आशय परमाणु से है ।

संख्या तावलिरुच्छ्वासः स्तोकस्तूच्छ्वाससप्तकः। स्तोकाः सप्त लवस्तेषां सार्धाष्टात्रिंशता घटी ॥३३॥
घटीद्वयं मुहूर्तोऽत्र मुहूर्तैस्त्रिंशता दिनम्। पञ्चदशैस्त्रिदिनैः पक्षः पक्षौ द्वौ मास इष्यते ॥३४॥
ऋतुर्मासद्वयेन स्यात्त्रिभिस्तैरयनं मतम्। तद्द्वयं वत्सरो वक्ष्ये धान्यमानमतः परम् ॥३५॥

अथ धान्यपरिभाषा

विद्धि षोडशिकास्तत्र चतस्रः कुडहो भवेत्। कुडहाँश्चतुरः प्रस्थश्चतुः प्रस्थानथाढकम् ॥३६॥
चतुर्भिराढकैर्द्रोणो मानी द्रोणैश्चतुर्गुणैः। खारी मानी चतुष्केण खार्यः पञ्च प्रवर्तिकाः ॥३७॥
सेयं चतुर्गुणा वाहः कुम्भः पञ्च प्रवर्तिकाः। इतः परं सुवर्णस्य परिभाषा विभाष्यते ॥३८॥

अथ सुवर्णपरिभाषा

चतुर्भिर्गण्डकैर्गुञ्जा गुञ्जाः पञ्च पणोऽष्ट ते। धरणं धरणे कर्षः पलं कर्षचतुष्टयम् ॥३९॥

अथ रजतपरिभाषा

धान्यद्वयेन गुञ्जैका गुञ्जायुग्मेन माषकः। माषषोडशकेनात्र धरणं परिभाष्यते ॥४०॥

१ KB वो। २ K वां। ३ सम्पूर्ण धान्य परिभाषा के लिए, P और B में निम्नलिखित रूप में विशेष उल्लेख है। M का पाठान्तर, कोष्ठकों में अंकित किया गया है। आद्य षोडशिका तत्र कुड (डु) बः प्रस्थ आढकः। द्रोणो मानी ततः खारी क्रमेण (मशः) चतुराहताः॥ (सहस्रैश्च त्रिभिष्षड्भिश्शतैश्च व्रीहिभिस्समम्। यस्सम्पूर्णोऽभवत्सोयं कुडुबः परिभाष्यते॥) प्रवर्तिकात्र ताः पञ्च वाहस्तस्याश्चतुर्गुणः। कुम्भस्सपादवाहस्स्यात् (पञ्च प्रवर्तकाः कुम्भः) स्वर्णसंज्ञाथ वर्ण्यते॥

संख्यात आवलियों से उच्छ्वास बनता है, सात उच्छ्वासका एक स्तोक और सात स्तोक का एक लव होता है तथा साढ़े अड़तीस लव मिलकर एक घटी बनती है ॥३३॥ दो घटी का एक मुहूर्त, तीस मुहूर्त का एक दिन, पंद्रह दिन का एक पक्ष और दो पक्ष का एक मास होता है ॥३४॥ दो मास मिलकर एक ऋतु, तीन ऋतुयें मिलकर एक अयन और दो अयन मिलकर एक वर्ष बनता है। इसके पश्चात् मैं धान्य के माप के विषय में उल्लेख करता हूँ ॥३५॥

धान्य-परिभाषा [धान्यमाप सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि]

चार षोडशिका मिलकर एक कुडहा बनता है, चार कुडहा मिलकर एक प्रस्थ बनता है और चार प्रस्थ का एक आढक होता है ॥३६॥ चार आढक का द्रोण, चार द्रोण की एक मानी, चार मानी की एक खारी और पाँच खारी की प्रवर्तिका होती है ॥३७॥ चार प्रवर्तिका का एक वाह और पाँच प्रवर्तिका का एक कुम्भ होता है। इसके पश्चात् स्वर्णमाप-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि दी जाती है ॥३८॥

सुवर्ण-परिभाषा [स्वर्णमाप सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि]

चार गंडक मिलकर एक गुंजा बनती है; पाँच गुंजा मिलकर एक पण बनता है और इसका आठगुणा एक धरण होता है। दो धरण मिलकर एक कर्ष बनता है और चार कर्ष मिलकर एक पल बनता है ॥३९॥

रजत-परिभाषा [रजतमाप सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि]

दो धान्य मिलकर एक गुंजा बनती है, दो गुंजा मिलकर एक माशा और सोलह माशा मिलकर एक धरण बनता है ॥४०॥ ढाई धरण का एक कर्ष एवं चार पुराण (या कर्ष) का एक दल होता है।

तद्द्वयं सार्धकं कर्षः पुराणांश्चतुरः पलम् । रूप्ये मागधमानेन प्राहुः संख्यानकोविदाः ॥४१॥

अथ लोहपरिभाषा

कला नाम चतुष्पादाः सपादाः षट्कला यवः । यवैश्चतुर्भिरंशः स्याद्भागोंऽशानां चतुष्टयम् ॥४२॥
द्रक्षूणो भागषट्केन दीनारोऽस्माद्द्विसङ्गुणः । द्वौ दीनारौ सतेरं स्योत्प्राहुर्लोहेऽत्र सूरयः ॥४३॥
पलैर्द्वादशभिः सार्धैः प्रस्थः फलशतद्वयम् । तुलादशतुलाभारैः संख्यादक्षाः प्रचक्षते ॥४४॥
वस्त्राभरणवेत्राणां युगलान्यत्र विंशतिः । कोटिकान्तरं भाष्ये परिकर्मणि नामतः ॥४५॥

अथ परिकर्मनामानि

आदिमं गुणकारोऽत्र प्रत्युत्पन्नोऽपि तद्भवेत् । द्वितीयं भागहाराख्यं तृतीयं कृतिरुच्यते ॥४६॥
चतुर्थं वर्गमूलं हि भाष्यते पञ्चमं घनः । घनमूलं ततः षष्ठं सप्तमं च चितिः स्मृतम् ॥४७॥
तत्संकलितमप्युक्तं व्युत्कलितमतोऽष्टमम् । तच्च शेषमिति प्रोक्तं भिन्नान्यष्टावमून्यपि ॥४८॥

अथ धनर्णशून्यविषयकसामान्यनियमाः

ताडितः खेन राशिः खं सोऽविकारी हृतो युतः । हीनोऽपि खवधादिः खं योगे खं योज्यरूपकम् ॥४९॥

१ M सतेराख्यम् । २ M रं । ३ M डि । ४ M विद्यात्कला सवर्णस्य । यहाँ चौथी संयुक्ति और कर्तृवाच्य है ।

गणना में कुशल व्यक्ति कहते हैं कि मगध माप के अनुसार उपर्युक्त रजत-माप हैं ॥४१॥

लोह-परिभाषा [लोह धातुमाप-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलि]

एक कला में चार पाद होते हैं; सवा छः कला का एक यव होता है; चार यव का एक अंश तथा चार अंश का एक भाग होता है ॥४२॥ छः भाग का एक द्रक्षूण, दो द्रक्षूण का एक दीनार और दो दीनार का एक सतेर होता है । लोह धातु के माप के सम्बन्ध में विद्वान् ऐसा कहते हैं ॥४३॥ साढ़े बारह पल मिलकर एक प्रस्थ होता है; दो सौ पल मिलकर एक तुला और दस तुला मिलकर एक भार होता है । ऐसा गणना में दक्ष विद्वान् कहते हैं ॥४४॥ इस माप में, बेत अथवा आभरण अथवा वस्त्रों के बीस युग्मों (जोड़ियों) की एक कोटिका होती है । इसके पश्चात् मैं गणित की मुख्य क्रियाओं के नाम देता हूँ ॥४५॥

परिकर्म नामावलि [गणित की मुख्य क्रियाओं के नाम]

इन क्रियाओं में प्रथम गुणकार (गुणा) है, और वह प्रत्युत्पन्न भी कहलाता है । दूसरी भागहार (भाग या भाजन) कहलाती है; और कृति (वर्ग करना) तीसरी क्रिया का नाम है ॥४६॥ चौथी, सामान्यतः वर्गमूल है और पाँचवी घन कहलाती है; छठवीं घनमूल और सातवीं चिति (योग) कहलाती है ॥४७॥ इसे संकलित भी कहते हैं । आठवीं व्युत्कलित (पूरी श्रेढि में से आरम्भ से ली गई उसी श्रेढि का कुछ भाग घटा देना) है जो शेष भी कहलाती है ॥४८॥

ये सब आठ क्रियायें भिन्न में भी प्रयुक्त होती हैं ।

शून्य तथा धनात्मक एवं ऋणात्मक राशियों सम्बन्धी सामान्य नियम

कोई भी संख्या शून्य से गुणित होने पर शून्य हो जाती है और वह चाहे शून्य के द्वारा विभाजित अथवा शून्य द्वारा घटाई जावे या शून्य में जोड़ी जावे, बदलती नहीं है ।

गुणा तथा अन्य क्रियाएँ शून्य के सम्बन्ध में शून्य की उत्पत्ति करती है और योग की क्रिया में शून्य वही संख्या हो जाता है जिसमें वह जोड़ा जाता है ॥४९॥

---

(४९) यह सरलतापूर्वक देखा जा सकता है कि कोई संख्या जब शून्य द्वारा भाजित की जाती है,

अनुवादक : प्रोफेसर एल.सी. जैन, जबलपुर

क्रमशः ....

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

गतांक से आगे ....

क्रीम :- अधिकतर क्रीमों में मुर्दा जानवरों की चर्बी तथा पारा या मरकरी मिला होता है जो चेहरे की त्वचा के अंदरूनी तैलीय को सोख लेता है और चेहरा गोरा (सफेद) कुछ दिनों के लिए हो जाता है। क्रीम के उपयोग से चर्म रोग हो जाते हैं एवं काले धब्बे बनने लगते हैं। विकल्प के रूप में उच्च क्वालिटी की आयुर्वेदिक क्रीम को उपयोग में लाया जा सकता है जैसे विको टरमेरिक आदि।

शैम्पू :- शैम्प रसायन आधारित होते हैं जिससे बाल जल्दी झड़ते हैं, सफेद हो जाते हैं एवं गंजापन आ जाता है। विकल्प के रूप में भारतीय कम्पनियों के आयुर्वेदिक शैम्पू एवं पावडर या रीठे का ही उपयोग करना चाहिए। कुछ कम्पनियों के तेलों में खतरनाक रसायन, मुर्दा जानवरों की चर्बी एवं कृत्रिम सिंथेटिक खुशबू मिले होते हैं जिससे चिड़चिड़ापन एवं नपुंसकता पैदा होती है तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम होती जाती है।

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य सौन्दर्य प्रसाधन के उत्पादों को घर में अहिंसक व अच्छी क्वालिटी का बनाने हेतु अन्यत्र उपलब्ध प्राकृतिक विधियों को विवेकानुसार उपयोग में लाया जा सकता है। साथ ही पैसा बचाने की शुरुआत भी की जा सकती है।

स्वच्छता एवं निरोगता

जैसी कहावत है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन तथा आत्मा का निवास होता है। शरीर को स्वस्थ तथा निरोग रखने में स्वच्छता तथा व्यायाम (एक्सरसाइज) का अत्याधिक महत्व है क्योंकि आज की भाग-दौड़ से भरी जिंदगी में व्यक्ति इतना व्यस्त हो गया है कि याद ही नहीं है कि इस भाग-दौड़ का वह तभी तक ही हिस्सेदार है जब तक उसका शरीर निरोग एवं स्वस्थ है। जो व्यक्ति अपने शरीर की उपेक्षा करता है वह अपने लिए शीघ्र ही बुढ़ापा, रोग, तथा मृत्यु के दरवाजे खोलता है। आज के समय में जो भयानक रोग तथा महामारियाँ दिखती हैं उनका मुख्य कारण व्यक्ति का स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की ओर ध्यान नहीं देना है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए उचित समय पर संतुलित भोजन, स्वच्छ जल, स्वच्छ जलवायु, आसपास का स्वच्छ वातावरण तथा समय एवं नियमित जीवन शैली और व्यायाम आवश्यक है। इससे सारे शरीर पर अधिकार हो जाता है तथा अपने मन की भावनाओं पर भी नियंत्रण रखा जा सकता है।

स्टडीज के अनुसार बंद कमरे में व्यायाम (एक्सरसाइज) करने की जगह खुले वातावरण में करने से अनेक फायदे हैं :-

- फ्रेश हवा में 12 प्रतिशत ज्यादा कैलोरी बर्न कर लेते हैं जबकि बंद कमरे में शरीर के देर से वार्म होने के कारण कैलोरी देर से बर्न होती है।
- खुली जगह में किसी मशीन की जरूरत नहीं पड़ती और आवश्यकता अनुसार कोई भी फ्रीहैंड एक्सरसाइज की जा सकती है।
- बाहर एक्सरसाइज करने में किसी का साथ मिलने से आप देर तक एक्सरसाइज कर सकते हैं और यह ट्रेडमिल पर वर्कआउट करने से कई गुना बेहतर होगा।

संतुलित भोजन -

1. सामान्य वजन के लिये - साधारण भोजन, 3-4 फल (सुबह-शाम, दो-दो), सलाद 1-1 कटोरी, हरे पत्तेदार सब्जी एवं पीले नारंगी फल, आधा किलो दूध, 2-3 कटोरी दालें। 10-15 दाने सूखे मेवे (जैसे अखरोट, बादाम, किशमिश, खजूर आदि)
2. अधिक वजन के लिये - अनाज रोटी 4-5 प्रतिदिन (1 कटोरी पका चॉवल=एक रोटी), दाल सब्जी, दही भरपूर, 10-15 गिलास पानी, 45 मिनट से 1 घंटा तक तेज सैर (पैदल चलना)।
3. डिटाक्सीफिकेशन के लिये - सुबह 1 कप दूध, 1 केला, तली सामग्री एवं मिठाई नहीं लें, दोपहर सलाद और फ्रूट जूस तथा शाम को 1 गिलास दूध, मिले जुले फलों का 1 कटोरी रस।

प्रत्येक व्यक्ति को नियमित रूप से लगभग 0.8 से 1 ग्राम प्रति किलो शरीर के वजन की आवश्यकता होती है। भिन्न ऋतुओं में प्रोटीन की आवश्यकता भिन्न-भिन्न होती है। जैसे ठंड के मौसम में प्रोटीन की पाचन क्षमता अधिक होती है जबकि ग्रीष्मकाल व वर्षाकाल में प्रोटीन की पाचन क्षमता कम हो जाती है। अतः हमें भोजन में प्रोटीन की संतुलित मात्रा लेना आवश्यक है।

शरीर को स्वच्छ रखना आवश्यक है क्योंकि उचित स्वच्छता नहीं रखने से त्वचा संबंधित रोग पैदा होते हैं। वातावरण स्वच्छ नहीं रहने से वायु दूषित होकर रोग उत्पन्न करती है। चौके में सर्फ/डिटरजेंट पावडर/साबुन में धुले स्वच्छ वस्त्रों (जैन समाज में इसे सोला के नाम से जाना जाता है) का उपयोग (शरीर पर पहनना एवं बर्तन आदि को पोंछना), भोजन सामग्री को प्रदूषण तथा जीवों/कीटाणुओं की मिलावट से बचाता है क्योंकि मैले वस्त्रों से गंदगी, प्रदूषण तथा जीवों (बैक्टीरिया/विषाणु) की उत्पत्ति की सम्भावना हो जाती है। निरोगी त्वचा, स्वस्थ शरीर तथा रोगों के उपचार हेतु निम्न अन्य अहिंसात्मक उपाय उपयोग में लाये जा सकते हैं-

1. प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा – उपवास, सूर्य की रोशनी, वायु, जल, मिट्टी, कलरथिरैपी (रंग चिकित्सा) रत्न चिकित्सा चुम्बकीय चिकित्सा, स्पर्श, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर, स्निग्ध या तेल, घी, काऊ थैरेपी, योगासन, ध्यान (आर्तध्यान एवं रौद्रध्यान को कम करके तथा धर्मध्यान को बढ़ाकर), वास्तुशास्त्र, मालिश, व्यायाम और पैदल घूमने आदि के द्वारा।
2. हार्मोन, सर्जरी या चीरफाड़ आधारित चिकित्सा (असाध्य रोग हेतु आवश्यक है, किन्तु सौंदर्य हेतु अनावश्यक है।)
3. वे आयुर्वेदिक/एलपैथिक/होम्योपैथिक औषधियाँ, जिनके फार्मूले के अवयवों (मिश्रण) की जानकारी पूरी हो अर्थात औषधि में अशुद्ध हिंसक पदार्थ और जीवों के अंग आदि का उपयोग तो नहीं किया गया है।
4. खाद्य सामग्री के द्वारा – प्रत्येक अनाज, दालें आदि, मसाले जैसे जीरा, सौंफ, हल्दी आदि, सूखे मेवे जैसे बादाम, काजू, किशमिश, मुनक्का आदि।
5. सब्जी एवं फल के द्वारा – रसों, छिल्कों, पत्तियों आदि के द्वारा।
6. खेल जैसे टेनिस, लान टेनिस, बेडमिन्टन, गोल्फ, क्रिकेट, फुटबाल, वालीबाल एवं कुश्ती आदि के द्वारा। 7. ज्योतिष रत्नों के द्वारा। 8. संगीत के द्वारा।

उपयोग के अतिरिक्त अनिद्रा, सिरदर्द, अपच, भूख नहीं लगना, असहज होना, हृदय की धड़कनें बढ़ना, दिमाग में कई विचारों का एक साथ कौंधना एवं एकाग्रता नहीं होना आदि रोगों के निवारण हेतु ध्यान, सकारात्मक विचार और योगासन का उपयोग सफलतापूर्वक किया जाता है।

वर्तमान में प्रायः सभी फलों/सब्जियों की ज्यादा पैदावार लेने के लिए रसायनिक-खादों (फर्टीलाइजर्स) तथा कीड़ों से बचाने हेतु खतरनाक रसायनिक-कीटनाशकों (इंसेक्टीसाइड्स) का उपयोग किया जाता है। **बाजार में बिकने वाली कुछ सब्जियों (विशेष रूप से लौकी आदि) को खेतों में आक्सीटोसिन नामक हार्मोन के इंजेक्शन के माध्यम से केवल एक दिन-रात में ही पूरा बड़ा आकार प्राप्त करने की जानकारी समाचार पत्रों में आ रही है। यह आक्सीटोसिन इंजेक्शन गाय-भैंसों को अधिक दूध प्राप्त करने हेतु लगाया जाता है। ऐसी जहरीली सब्जियों के सेवन से व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार हो सकता है किन्तु इसकी जाँच करने हेतु कोई उपाय लेखन की जानकारी में नहीं आया है। अतः इस प्रकार के फलों/सब्जियों के सेवन से सावधान रहने, बचने के विकल्प खोजने की नितांत आवश्यकता है।** भारत देश में कुछ ही किसानों के द्वारा फलों/सब्जियों/अन्न/दलहन आदि की ज्यादा पैदावार/फसल लेने तथा कीड़ों से बचाने के लिए प्राकृतिक **(जैविक)** खादों व कीटरक्षक पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है जिससे **फलों/सब्जियों** आदि के **पूरे पोषक तत्व गुण पाये जाते हैं**, साथ ही ये **जहरीले भी नहीं** होते हैं।

क्रमशः.........

महाकवि श्री भागचन्द्र जी ''भागेन्दु'' विरचित-

श्री महावीराष्टक स्तोत्रम् का हिन्दी अनुवाद

अनुवादन : पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश'

1

जिनके केवलज्ञान मुकुर में, व्यय ध्रौव्य-उत्पाद सहित।
एक साथ प्रतिभासित होते, सकल चराचर अंत रहित ।।
रवि-सम किया प्रकाशित जिनने, मोक्षमहापथ जग सुखकार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

2

जिनके नयन कमल दोनों ही, रहित लालिमा, निश्चल हैं।
अंतरंग भी क्षमाभाव को, करें जनों को प्रकटित हैं ।।
जिनकी मूर्ति प्रशान्तमयी है, है अतिशयी विमल आकार ।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

3

जगमगात मणि-मुकुट-इन्द्रगण, सविनय शीस झुकाते हैं।
उनसे भगवच्चरण कमल द्वय, अतिशय शोभा पाते हैं।।
जिनका सुमरन भवाताप-हर, प्राणि जगत ज्यों जल बौछार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

4

जिनकी एक मुदित-मन-मेंढक, भाव सहित पूजा करने।
चला, मरा, स्वर्ग में पहुँचा, हुआ गुणी-सुखी क्षण में ।।
क्या अचरज सद्भक्त अगर, पा जाते हैं शिव-सुख पार ।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

5

कनक वर्ण आभा के धारी, तदपि अमूर्तिक ज्ञाननिवह ।
नैक स्वभावी मात्र एक हैं, जन्म रहित सिद्धार्थ तनय ।।
श्रीमान् होकर भी जो हैं वीतराग, गति अद्भुत धार ।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

6

विविध नयों की कल्लोलों से, पावन जिन वच गंगनदी।
बृहद् ज्ञान-जल की धारा से, जगज्जनों की नहलाती ।।
इदानीम् अपि बुध-हंसों से, सेवित जो अतिशय मनहार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

7

दुर्निवार वेग है जिसका, तीन लोक हारा जिससे ।
कामसुमट को जिनने जीता, कुमारकाल ही निजबल से।।
ज्ञानप्रकाशी-नित्यानन्दी, पाया मोक्षपुरी अधिकार ।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

8

महामोह-रोग-प्रशमन को, जो आकस्मिक, वैद्यप्रवर।
स्वार्थ रहित भ्राता हैं जगके, महिमाशाली, मंगलकर ।।
भव-भयभीत सज्जनों के जो, हैं शरण्य, सुगुणभंडार ।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन-पथ सदा विहार ।।

फलश्रुति

भक्ति सहित 'भागेन्दु' रचित यह, महावीर अष्टक स्तोत्र।
जो भी पढ़ता या सुनता है, पाता परम्परा से मोक्ष ।।

प्रशस्ति

स्वाध्यायी-जिज्ञासु जनों हित, पाठ रचाया बारम्बार ।
फलस्वरूप 'राकेश' को मिला, अनुवादन उत्तम उपहार ।।

श्री इन्द्रप्रकाश जैन, मवाना, मेरठ (उ.प्र.) ने मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज का ससंघ विहार हस्तिनापुर से गाजियाबाद तक हर्षोउल्लास पूर्वक सम्पन्न कराया एवं पुण्य का संचय किया है । श्री इन्द्रप्रकाश जी के इस पुनीत कार्य पर भाव विज्ञान परिवार उन्हें साधुवाद प्रेषित करता है।

'ज्ञान' और 'विवेक' में बड़ा अन्तर है

डॉ. वीरसागर जैन

ज्ञान के लिए सामान्य तौर पर अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है – यथा–ज्ञान, विवेक, अनुभव, जानना, वेदन, परिवेदन, संवेदन, परिच्छेदन, परिच्छिति, संचेतन आदि। परन्तु यदि सूक्ष्मता से देखा जाए तो इन सभी पर्यायवाची शब्दों में परस्पर बड़ा अन्तर है। उदाहरणार्थ 'ज्ञान' और 'वेदन' में अन्तर बताते हुए आचार्य अमितगति लिखते हैं–

यथावस्तु परिज्ञानं ज्ञानं ज्ञानिभिरुच्यते।
राग-द्वेष-मद-क्रोधैः सहितं वेदनं पुनः ।।

–योगसारप्राभृत 4/24

अर्थ : जो वस्तु जिस रूप में स्थित है उसी रूप में उसके परिज्ञान को ज्ञानियों के द्वारा 'ज्ञान' कहा गया है और जो परिज्ञान (जानना) राग–द्वेष–मद–क्रोधादि कषायों से युक्त है उसका नाम 'वेदन' है।

इसी प्रकार 'बुद्धि', 'ज्ञान' और 'असम्मोह' में अन्तर बताते हुए वे लिखते हैं –

बुद्धिमक्षाश्रयां तत्र ज्ञानमागमपूर्वकम् ।
तदेव सदनुष्ठानमसंमोहं विदो विदुः ।।

–योगसारप्राभृत 8/82

अर्थ : विज्ञ पुरुष इन्द्रियाश्रित ज्ञान को 'बुद्धि', आगमपूर्वक हुई जानकारी को 'ज्ञान' और आगमपूर्वक हुआ ज्ञान ही जब सत्य अनुष्ठान को – अभ्रान्त रूप में स्थिरता को प्राप्त होता है तब उसे 'असम्मोह' कहते हैं।

इसी प्रकार अन्य भी सभी पर्यायवाची शब्दों के अर्थ–भेद को सावधानीपूर्वक समझना चाहिए। यहाँ सभी के भेद को स्पष्ट करने का अवकाश नहीं है, परन्तु 'ज्ञान' और 'विवेक' – इन दो बहुप्रयुक्त शब्दों के अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं।

'ज्ञान' और 'विवेक' – ये दो शब्द ऐसे हैं जो ऊपर–ऊपर से देखने पर समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं, किसी स्थूल अपेक्षा से इन्हें समानार्थक कहा भी जा सकता है, परन्तु सूक्ष्मता से देखा जाये तो वस्तुतः ये दोनों शब्द समानार्थक नहीं हैं, इनमें महान् अन्तर है, अतः हमें इनका प्रयोग भी विवेकपूर्वक ही करना चाहिये। हमारे प्राचीन आचार्यों ने भी इन दोनों शब्दों का प्रयोग बहुत विवेकपूर्वक किया है।

जहाँ जो उपयुक्त है, वहाँ उसी का प्रयोग किया है।

व्याकरण शास्त्र के अनुसार 'ज्ञान' शब्द 'ज्ञा' धातु से बना है जिसका अर्थ है – जानना। किन्तु 'विवेक' शब्द विच धातु से बना है जिसका अर्थ पृथक्भाव होता है– भेद करना होता है – विभजनं विवेकः। 'ज्ञायतेऽनेनेति ज्ञानं' किन्तु 'विविच्यतेऽनेनेति विवेकः'। 'विवेक' शब्द की निष्पत्ति इस प्रकार है – 'विविच्यतेऽनेनेति विवेकः' । विविनवित सत्यासत्यं यथार्थयथार्थ कार्याकार्य ग्राह्यमिति वा विवेकः। 'वि' उपसर्गाद् 'विच' धातोः घञ् प्रत्यये अनुबन्धलापे 'चजो कुः घिण्यतोः इति सूत्रेण कुत्वे गुणे च इति 'विवेक' शब्द–निष्पत्तिः।

अर्थात जो सत्य और असत्य, यथार्थ और अयथार्थ, कार्य और अकार्य अथवा ग्राह्य और अग्राह्य का भेद बताता है वही विवेक है। इसका अभिप्राय है कि ज्ञान का कार्य मात्र जानना है, परन्तु विवेक का कार्य मात्र जानना नहीं, अपितु सत्य–असत्य, हेय–उपादेय, स्व–पर आदि का भेद जानना है। यथा–स्व–पर–विवेक, नीर–क्षीर–विवेक इत्यादि प्रयोग लोकप्रचलित भी है। इनमें 'विवेक' के स्थान पर 'ज्ञान' शब्द का प्रयोग उपयुक्त नहीं है। आचार्यों ने कहा है – **'चिज्जडयोर्भेदविज्ञानं विवेकः।'** अर्थात चेतन व अचेतन का भेद विज्ञान ही विवेक है। अथवा – **'विवेकः पृथगात्मता'** (अमरकोष 2/7/38)

मोक्षमार्ग में इसी 'विवेक' की उपयोगिता है, कोरे 'ज्ञान' की नहीं। अध्यात्मप्रेमी कविवर पं. दौलतराम भी 'देवस्तुति' में लिखते हैं :–

तुम गुण चिन्तन निज-पर-विवेक।
प्रगटै विघटैं आपद अनेक ।।

अर्थात् हे जिनेन्द्रदेव! आपके गुणों के चिंतन से 'स्व–पर–विवेक' प्रकट होता है और उसी से अनेक आपतियाँ दूर होती हैं। तात्पर्य यही है कि सुख–शांति का कारण विवेक है, ज्ञान नहीं। यद्यपि शास्त्रों में अनेक स्थानों पर 'ज्ञान' को भी सुख का कारण कहा गया है, परन्तु वह धन–कन–कंचनादि भौतिक परपदार्थों से ध्यान हटाने के लिए ही कहा गया है कि हे जीव! तू धनादि परपदार्थों को सुख का कारण मान रहा है, पर वास्तव में वे सब सुख के कारण नहीं हैं, सुख का कारण तो मात्र ज्ञान ही है–यथा–

धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ।।

–महाकवि भूधरदास, बारह भावना

परन्तु यदि 'जानना मात्र' सुख का कारण हो, तो 'नहीं जानना' दुःख का कारण ठहरेगा, जो

न्यायसंगत नहीं है, असत्य है। आचार्यकल्प पं. टोडरमल भी अपने 'मोक्षमार्गप्रकाशक' में लिखते हैं- 'यदि जानना न होना दु:ख का कारण हो, तो पुद्गल के भी दु:ख ठहरे, परन्तु दु:ख का मूलकारण तो इच्छा है और इच्छा क्षयोपशम से होती है, इसलिए क्षयोपशम को दु:ख का कारण कहा है। परमार्थ के क्षयोपशम भी दु:ख का कारण नहीं है।'

यही आचार्य संमतभद्र ने भी आप्तमीमांसा (कारिका 96-97) में कहा है कि यदि अज्ञान से ही बन्ध होता हो तो ज्ञेय तो अनन्त है, केवलज्ञानी के अतिरिक्त सबको ही-अचेतन और अकषायी जीवों को भी बन्ध होना चाहिए।

अध्यात्मशास्त्रों में भी इसीलिए जिसे मात्र ज्ञान हो उसे 'ज्ञानी' नहीं कहते हैं, अपितु जिसे स्व-पर-भेदविज्ञान हो-विवेक हो, उसे ही 'ज्ञानी' कहते हैं।

'ज्ञान' और 'विवेक' के अन्तर को समझने के लिए एक युक्ति यह भी है कि शास्त्रों में ज्ञान के मतिज्ञानादि भेद किये हैं। विचार करना चाहिए कि क्या उन्हें हम 'विवेक' के आठ भेद होते हैं - ऐसा कह सकते हैं? यदि नहीं तो अवश्य ही 'ज्ञान' और 'विवेक' में महान अन्तर है। ज्ञान को सूर्य, दर्पण आदि की उपमा दी जाती है और विवेक को 'हंस' की उपमा दी जाती है।

सारांशतः हमें समझना चाहिए कि विवेक (स्व-पर-भेदविज्ञान)ही सुख का कारण है, मोक्षमार्ग है और उपादेय है। आज तक जितने भी जीव सुखी (सिद्ध) हुये हैं वे सब एक स्व-पर-भेदविज्ञान से ही हुये हैं और जितने भी संसार में परिभ्रमण करते हुये दु:ख उठा रहे हैं, वे सब इस स्व-पर-भेदविज्ञान के अभाव के कारण ही। कहा भी गया है कि -

भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धाः ये किल केचन ।
अस्यैवाभावतो बद्धाः बद्धाः ये किल केचन ।।

- आचार्य अमृतचन्द्र, आत्मख्याति, कलश, 131

किसी संस्था का स्वामित्व वाले धार्मिक क्षेत्र पर जाने एवं ठहरने के लिए अथवा वहां की वस्तुओं को उपयोग करने के लिए वहां के योग्य व्यवस्थापकों से अनुमति लेना चाहिए। यदि अनजाने में उपयोग में आ जाये तो क्षमा याचना करना आवश्यक है। अविरोध स्थान पर निस्सहि, अस्सहि अवश्य करें।

किसी क्षेत्र या संस्था की किन्हीं वस्तुओं का उपयोग करने के बाद श्रावकों को उस क्षेत्र या संस्था के लिए निश्चित की गई या योग्य राशि का भुगतान करना चाहिए।

सम्यक् ध्यान शतक

– मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

ध्यान हेतु काल

सुबह, मध्य व शाम में, नित्य करें शुभ ध्यान।
योग सुषुम्ना स्वर चले, परम शांति हो जान।।

❖

दोय, चार व छह घड़ी, सामायिक में ध्यान।
उत्तम, मध्यम व जघन, काल तीन पहिचान।।

ध्यान हेतु भाव

सब जीवों पर साम्य हो, संयम भावन नेक।
आर्त्त, रौद्र का त्याग हो, समता पूर्ण विवेक।।

समता

ना राजा ना रंक लख, ना ही सौम्य कुरूप।
आतम इनसे भिन्न है, यति लखता सम रूप।।

संयम

इन्द्रिय विषयों में जहाँ, भोग रुचि का त्याग।
त्रस, थावर का घात तज, तजें जगत से राग।।

सद्भावनाओं के प्रकार

जहाँ भावना धर्म की, पच्चिस सोलह जान।
बारह, सप्त व चार भी, त्रि, द्वि, इक शुभ मान।।

❖

पांच व्रतों की भावना, पांच–पांच पहिचान।
दर्शनविशुद्धि आदि भी, सोलह भावन मान।।

❖

अनित्य आदिक भावना, बारह भावन जान।
शास्त्राभ्यास जिन स्तुति, आदिक सात सु–मान।।

❖

मैत्री प्रमोद भावना, करुणा भी शुभ रूप।
मध्यस्थी चौथी रही, मोक्षमार्ग अनुरूप।।

क्रमशः ....

जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा

डॉ. संजय जैन पथरिया

गतांक से आगे ....

जिस प्रकार गुलाब जामुन शक्कर घृत एवं खोवादि से बनने के कारण, गुलाब जामुन के शक्करादि मूलभूत तत्व है, उसी प्रकार यह लोक धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्‌गल एवं काल से गठित है। इसलिये षट्‌द्रव्य लोक के मूलभूत पदार्थ हैं। षट्‌द्रव्यों को छोड़कर लोक नहीं है लोक को छोड़कर षट्‌द्रव्य नहीं हैं। लोक का विशेष अध्ययन षट्‌द्रव्यों का अध्ययन है एवं षट्‌द्रव्यों का अध्ययन लोक का अध्ययन है। मूलतः उपरोक्त षट्‌द्रव्य ही वस्तुतः मूल तत्व हैं। अन्य दृश्यमान, अनुभवगम्य एवं शास्त्र में प्रणीत अन्य तत्त्वों की इन्हीं छहद्रव्यों के परिणाम विशेष एवं मिश्रण विशेष से ही सृष्टि है। विश्वतत्व जिज्ञासुओं के लिये षट्‌द्रव्यों का विशेष विश्लेषण आवश्यक है। जब तक वस्तुगत रहस्य को नहीं जान पाते हैं तब तक मानसिक शांति हेतु अहिंसा असंभव है। मानसिक अहिंसा ही वास्तविक अहिंसा है। इस अहिंसा के माध्यम से हम अपने देश, राष्ट्र और विश्व का कल्याण कर सकते हैं। यह मानसिक अहिंसा ही वास्तविक ज्ञान है एवं वास्तविक ज्ञान ही महान पवित्र नहीं है इसलिये कहा गया है – ''नहि ज्ञानेन सम पवित्रमिह विद्यते'' अर्थात् विश्व में ज्ञान के समान दूसरी कोई वस्तु पवित्र नहीं है। ''णाणं पयाषणो'' अर्थात् ज्ञान प्रकाशक है। ज्ञान के माध्यम से अज्ञान का निराकरण एवं हित की प्राप्ति, अहित का परिहार एवं विपरीतता में साम्य भाव होते हैं। जिस प्रकार सूर्य का उदय होने पर अंधकार का स्वयमेव नाश हो सकता है एवं विश्व में एक नूतन जागृति आती है, उसी प्रकार सम्यग्ज्ञान के उदय से अज्ञान का विनाश एवं ज्ञान राज्य में नूतन संचेतना का संचार होता है। इस दृष्टिकोण से षट्‌द्रव्यों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है :-

1. जीव पुद्‌गल द्रव्य की गति का माध्यम – धर्म द्रव्य

क्रियाशील विश्व में यत्र-तत्र, यदा-कदा अनेक क्रियाएँ होती दिखाई देती हैं। आकाश में पक्षी उड़कर एक स्थान से दूसरे अन्य में गमन करते हैं। पानी उद्‌गम स्थान से नदी के माध्यम से समुद्र पर्यन्त जाता है। आकाश में विमान जाते हैं। समुद्र में जहाज चलते हैं। जल में जलचर थल में थलचर एवं आकाश में नभचर विचरण करते हैं। ट्रेन, बस आदि अपने-अपने पथ में गति करते हैं। मनुष्य दैनिक कार्य को सम्पन्न करने के लिए अपना हाथ पैर आदि अवयवों का संचालन करके अनेक कार्य करता है। आकाश में मेघ संचार करते हैं। यह समस्त क्रियाएँ स्वयं द्रव्य को अपनी शक्ति के माध्यम से मुख्य रूप से कार्य करने पर भी एवं जल माध्यम, थल माध्यम, आकाश माध्यम, आदि विशेष माध्यम होने पर भी

इन सबके लिये कोई एक सर्व साधारण निमित्त कारण होना चाहिए। इनमें निमित्त कारण-भूत जो द्रव्य हैं उसको जैनों की विशेष परिभाषा में धर्म द्रव्य अर्थात् गति माध्यम द्रव्य कहते हैं।

गई परिणयाण धम्मो, पुग्गल जीवाण गमण सहयारी।
तोयं जह मच्छाणं, अच्छंता णेव सो णेई ॥ द्र.सं. 17॥

As water assists the movement of moving fish so Dharma assists the movement of moving Pudgala and Jiva. (But) It does not move Pudgala and Jiva which are not moving.

In this verse, we have a description of a peculiar substance known as Dharma in Jaina Philosophy. It should be remembered that the meaning of the word Dharma, as used by the Jainas, has not the slightest resemblance to that of the same word in Hindu philosophy.

The Jaina philosophy means by Dharma a kind of ether, which is the fulcrum of motion. With the help of Dharma, Pudgala and Jiva move. Dharma does not make this move, but only assists them in their movement when they begin to move. In all the works in Jaina literature, we have nearly the same illustration given of Dharma. The illustration is as follows. As fish moves in water, without being impelled in their movement by water, but only receiving assistance of the water in their movement, so Pudgala and Jiva move, assisted by Dharma, but not impelled by it. Dharma has no form, is eternal and void of activity.

Dharma is, therefore, that which is not moving in itself and not imparting motion to anything, helps the movement of Jiva and Pudgala. Without Dharma, the motion of Jiva and Pudgala would be impossible.

जैसे पानी मछलियों को गमन करने में सहायक है उसी प्रकार धर्म द्रव्य जीव और पुद्गलों को गमन में सहायक है किन्तु गमन करते हुए जीव एवं पुद्गल को गमन में सहकारी नहीं है।

इस कथन में जैन दर्शन के अनुसार जो एक विशेष धर्म द्रव्य है उसका वर्णन है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वैदिक दर्शन शास्त्र धर्म शब्द का जो अर्थ करते हैं उससे जैन दर्शन शास्त्र कुछ भिन्न अर्थ करता है। जैन दर्शन के अनुसार धर्म द्रव्य का अर्थ एक प्रकार से ईथर है, जो कि द्रव्यों के गमन में सहकारी है। धर्म द्रव्य की सहायता से जीवन और पुद्गल गमन करते हैं। धर्म द्रव्य जीव और पुद्गल को गमन नहीं करता है किन्तु जब से गमन प्रारंभ करते हैं उस समय से सहायक होते हैं। समस्त जैन शास्त्रों में धर्म द्रव्यों के विषय में प्राय: एक जैसे ही उदाहरण दिये गये हैं। जैसे मछली जल में, जल के बिना प्रेरणा से गमन करती है किन्तु जल गमन में आवश्यक है उसी प्रकार जीव और पुद्गल के गमन के

लिये धर्म द्रव्य की सहायता आवश्यक है परंतु उसका गमन धर्म द्रव्य के द्वारा प्रेरित नहीं है। धर्म द्रव्य अमूर्तिक, निष्क्रिय, नित्य है।

इसलिये धर्म द्रव्य स्वयं गमनशील नहीं है, ना ही अन्य द्रव्यों के गमन में सक्रिय भाग लेता है बल्कि जीव और पुद्‌गल के गमन में सहायक होता है। धर्म द्रव्य के बिना जीव पुद्‌गल गमन नहीं कर सकते हैं।

गति सहायक धर्म द्रव्य के लिये अन्य उदाहरण भी ले सकते हैं। जैसे-रेल की पटरी। रेल जब गमन करती है तब उसके गमन में पटरी सहायक होती है। स्थिर रेल की पटरी बलपूर्वक गमन नहीं करती है। रेल तो वाष्प, इलेक्ट्रिक शक्ति के द्वारा एवं चालक के द्वारा परिचालित होकर चलती है तो रेल भी पटरी के बिना रेल गमन नहीं कर सकती है। इसी प्रकार थलचर जीव, जलचर जीव एवं आकाशचर जीव जब थल, जल, आकाश में गमन करते हैं तो उस समय क्रमशः थल, जल और आकाश गमन में सहायता करते हैं। थल, जल और आकाश के बिना गमन नहीं हो सकता है। उसी प्रकार प्रत्येक गमनात्मक क्रिया में धर्म द्रव्य सहायता करता है। इसी से धर्म द्रव्य को वर्तमान विज्ञान भी मानता है। यथा-

'The first problem was, of course, that if light waves were real waves, they must be waves in something. They were plainly not waves in was necesary, therefore, to invent something else, which was not matter, for them to be waves in. This something they called the 'ether'and imagined it as an utterly thin elastic fluid that flowed undisturbed between the particles of the maternal universe and filled all 'empty sapce' of every kind.

What was this ether like? Difficulties and contradictions appeared at ones. For it was proved to be : (1) the thinnest gas; (2) more rigid than steel; (3) absolutely the same everywhere; (4) absolutely weightless; and (5) in the neighbourhood of any electron, immensely heavier than lead'

प्रथम समस्या यह है कि यदि प्रकाश की तरंगें वस्तुतः तरंगें हैं तो वे निश्चय ही किसी वस्तु में हैं। साधारणतया ये तरंगें भौतिक नहीं हैं। इसलिये अविष्कार की आवश्यकता हो जाती है कि कोई वस्तु होना चाहिये जो कि अभौतिक है, जिससे उसमें तरंगें हैं या कुछ वस्तु को जिसे वैज्ञानिक ईथर नाम से पुकारते हैं एवं कल्पना करते हैं कि वह स्पष्टता से पतला एवं विद्युत प्रवाह वाला है। इस प्रवाह का भौतिक विश्व के मध्य में किन्हीं अंशों, अणुओं द्वारा विक्षोभ नहीं होता है एवं सम्पूर्ण शून्य प्रदेश में भरा है।

किस प्रकार का यह ईथर है? इस संबध में अनेक प्रश्न उठते हैं। इस प्रश्न का समाधान करना कठिन है। इसे सिद्ध करने के लिये वैज्ञानिकों ने कुछ तथ्य दिये हैं - (1) पतली से पतली गैस से भी

पतला है; (2) इस्पात से भी अधिक कठिन है ; (3) सम्पूर्ण रूप से प्रत्येक स्थान में समान है; (4) सम्पूर्ण रूप से भार शून्य है; और (5) इलेक्ट्रान के निकट सम्बन्ध में सीसे से भी अधिक भारी है।

यह धर्मद्रव्य एक अखण्ड लोकाकाश प्रमित प्रदेश वाला द्रव्य है। धर्मद्रव्य अखण्ड एवं संकोच विस्तार गुण से रहित होने के कारण अनादिकाल से लोकाकाश में ही व्याप्त है। अलोकाकाश में धर्मद्रव्य का अभाव होने से जीव, पुद्गल द्रव्य का गमन नहीं हो सकता है। इसलिये अनादिकाल से विश्व का जो आकार है उतना ही रहता है उसमें परिवर्तन नहीं होता है। इसलिये कुछ वैज्ञानिक जो विश्व को विस्तार शील मानते हैं वह सिद्धांत ठीक नहीं है। यदि विश्व का विस्तार हो रहा है तब एक दिन ऐसा आयेगा जिस समय विश्व अनन्त आकाश में विलीन हो जायेगा।

(2) अधर्म द्रव्य

पक्षी आकाश में उड़ता हुआ एक स्थान पर बैठ जाता है। यान वाहन की गति रोकने पर वह यान वाहन स्थिर हो जाता है। पथिक चलते-चलते क्लांत-श्रांत होने पर वृक्ष के नीचे बैठ जाता है। इस प्रकार की स्थिति में जो एक साधारण निमित्त (सहायक) कारण है उसको अर्ध द्रव्य कहते हैं।

अधर्म द्रव्य यह शब्द जैन दर्शन का एक विशेष पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ पाप नहीं है, किन्तु एक अमूर्तिक, निष्क्रिय लोकाकाश व्यापी असंख्यात प्रदेशी वाला एक शाश्वतिक द्रव्य है। यह द्रव्य ठहरते हुए जीव पुद्गल को ठहरने में केवल सहकारी कारण है। आचार्यों ने कहा है-

ठाण जुदाण अधम्मो, पुग्गलजीवाण ठाणसहयारी।
छाया जह पहियाणं, गच्छंता णेव सो धरई ॥द्र.सं. 18॥

As shadow of the tree assists the staying of the travellers, (so) Adharma assists the staying of the Pudgalas and Jivas which become stationary. But that (i.e. Adharma) does not hold back moving (Pudgalas and Jivas)

The following examples are invariably found in all Jaina works, as illustrating Adharma. First, Adharma is linked to earth which does not stop creatures from moving but becomes a support of them when they are at rest, Secondly, Adharma is said to be like shadow of the tree which does not forcibly stop the travellers scorched by the rays of the sun from moving, but assists in their rest, while they of their own accord come to sit in the shade.

We should, therefore, remember that without Dharma it will be impossible for any substance (Dravya) to move. The universe is divided into two parts: (1) Lokakasa, which is pervaded throughout by Dharma and Adharma and in which

movement of rest may, therefore, happen and: (2) Alokakasa which is beyond Lokakasa and which Dharma and Adharma are absent We have.

जैसे वृक्ष की छाया ठहरते हुए यात्रियों को स्थान देती है उसी प्रकार अधर्म द्रव्य ठहरते हुये जीव और पुद्गल को ठहरने में सहायक होता है किंतु गमन करते हुए जीव और पुद्गल को ठहराने के लिए प्रेरणा नहीं देता है।

अधर्म द्रव्य के संबंध में उपरोक्त उदाहरण समस्त जैन शास्त्रों में मिलता है प्रथमतः अधर्म का पृथ्वी के साथ संबंध जोड़ा गया है। जैसे चलते हुए जीवों को पृथ्वी ठहराती नहीं है। किंतु ठहरते हुए जीव को ठहरने में सहायता देती है। द्वितीयतः अधर्म द्रव्य को छाया के समान कहा गया है जो कि बलपूर्वक सूर्य किरणों से संतप्त यात्रियों को ठहराती नहीं है किंतु जब ये यात्री स्वयं छाया में आकर बैठते हैं तब उनको बैठने में सहायक होती है।

इसलिये हम लोगों को स्मरण रखना चाहिए कि धर्मद्रव्य बिना कोई द्रव्य गति नहीं कर सकता है और अधर्म द्रव्य के बिना कोई नहीं ठहर सकता है। सम्पूर्ण विश्व दो भागों में विभक्त है – (1) लोकाकाश, जो धर्म एवं अधर्म से व्याप्त है एवं जिसमें पदार्थो गति एवं स्थिति होती है। और (2) आलोकाकाश, जो कि लोकाकाश से परे है, जो धर्म एवं अधर्म द्रव्यों से रहित है। पहले से ही ज्ञात है कि ऊर्ध्वगमनत्व जीव का एक स्वभाव है। जब जीव क्रमशः ऊपर की ओर गमन करने क लिये पुरुषार्थ करता है और ऊर्ध्वगमन करने में तब ही वह समर्थ हो सकता है जबकि धर्मद्रव्य की सहायता मिलती हो। क्रमिक उच्चतर गमन से वह उस सीमित लोकाकाश के छोर पर पहुँचता है जिसके आगे धर्म द्रव्य नहीं है अतएवं वहां रहने के लिये बाध्य होता है। इसका विश्लेषण चौदहवीं गाथा में किया गया है जिसमें कहते हैं कि मुक्त जीव लोकाकाश के अग्रभाग में स्थित है जबकि आत्मा में उर्ध्वगमनत्व की शक्ति निहत है तो भी वह लोक के ऊपर धर्मद्रव्य के अभाव के कारण ऊपर गमन नहीं कर पाता है।

क्रमशः ....

क्षेत्र या संस्थान में कचड़ा नहीं फैलाना चाहिए और अपने द्वारा किसी तरह का कचड़ा फैल गया हो तो उसे स्वच्छ करने का ध्यान रखना चाहिए।

बिना बुलाए या बिना अनुमति के किसी के घर में, कार्यालय में अथवा दुकान की निश्चित सीमा के आगे या अन्दर नहीं जाना चाहिए।

अपने या पर के गृह से बाहर जाते समय माता-पितादि से या गृह के स्वामी आदि से कि मैं (निश्चित जगह) जा रहा हूँ ऐसा बोलना चाहिए।

बारह मंगल भावना

– श्रीपाल जैन 'दिवा'

सबके मंगल में निज मंगल ।
निज मंगल में सबका मंगल ॥ 1 ॥
शुभ चिन्तन ही करुणा मंगल ।
पर हित करना दया सुमंगल ॥ 2 ॥
धीरज-धरम सुसाता मंगल ।
सद्पुरुषार्थ करे सुख मंगल ॥ 3 ॥
क्षमा वीर उर नभ सा मंगल ।
दया लबालब हृद-घट मंगल ॥ 4 ॥
मार्दव से मृदुता भर मंगल ।
आर्जव 'दिवा' सरल मन मंगल ॥ 5 ॥
सभी लोभ जित शौच सुमंगल ।
मूर्छा रिते तो उत्तम मंगल ॥ 6 ॥

मन न दुखे सत से शुभ मंगल ।
असत् जीत सुख उत्तम मंगल ॥ 7 ॥
उदासीन जग विरत सुमंगल ।
संयम धर जीवन में मंगल ॥ 8 ॥
तन से तप कर निज का मंगल ।
अन्तर-बाह्य सभी तप मंगल ॥ 9 ॥
देह विरत जग त्याग सुमंगल ।
पर उपकार दान हित मंगल ॥ 10 ॥
चौविस परिग्रह त्याग सुमंगल ।
धरम अकिंचन उत्तम मंगल ॥ 11 ॥
आसक्ति-मुक्ति में मंगल ।
ब्रह्मचर्य निज रमण सुमंगल ॥ 12 ॥

गोटेगाँव (जबलपुर) जैन समाज का स्तुत्य श्रुत संवर्धन

श्रुतपंचमी के पुनीत अवसर पर पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर संघस्थ पूज्य आर्यिका माता श्री 105 मृदुमति की प्रेरणा से गोटेगाँव जैन समाज द्वारा एक लाख छ हजार चार सौ तैतालीस (106443) रूपये का दान घोषित किया गया। यह दान प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द्र जैन द्वारा क्रियान्वित भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली, क्षपणासार को प्रोजेक्ट समन्वित ग्रंथ के प्रकाश हेतु दिनांक 16/8/10 को अनुदानित किया गया है। एतदर्थ श्री देव पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर ट्रस्ट कमेटी, गोटेगाँव (जिला नरसिंहपुर) के पदाधिकारीगण तथा अन्य श्रुतप्रेमी बंधुओं का योगदान एक प्रोज्वल आदर्श उपस्थित करता है। यह प्रकाशन गुलाबरानी कर्म विज्ञान संग्रहालय, जबलपुर द्वारा कराया जा रहा है जिनके द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया।

राष्ट्र की संस्कृति और मर्यादा की रक्षा के लिए-

युवा पीढ़ी को सुसंस्कारित करें

महेन्द्र कुमार जैन ''भगत जी''

वर्तमान युग भौतिकता का युग है, जिसमें हमारी युवा पीढ़ी अध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों से अनभिज्ञ होकर संस्कार विहीन होती जा रही है और पश्चिमी संस्कृति के भोगवादी कुसंस्कारों के दल-दल में फँस रही है। यह कैसी बिडम्बना है कि जो माँ-बाप, धन-दौलत व भौतिक सुविधाएँ अधिक से अधिक बढ़ाने के चक्कर में रात-दिन एक कर रहे हैं अपनी पत्नियों को धन-दौलत से लाद देते हैं, जिससे वह दौलत को खुले हाथ से खर्च करने के लिए गहनों, साड़ियों, किटी पार्टियों, महफिलों, माल, सिनेमाघरों, होटलों आदि में जाने लग जाती हैं और छोटे बच्चों को प्रायः नौकरों, कुत्तों के सहारे छोड़ दिया जाता है, तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि हमारे छोटे, नन्हें मुन्ने, बच्चे गलत आदतों को सीखने से कैसे बच सकते हैं और अच्छे संस्कारों से कैसे सुसंस्कारित हो सकते हैं? धर्म के संस्कार न होने से घर-परिवार में धैर्यता और मर्यादा लुप्त होती जा रही है। छोटी-मोटी बातों पर ही तकरार-तनाव-बिखराव बढ़ रहा है। वर्तमान में स्वार्थ और लोभ की पूर्ति के लिए रिश्तों को सूली पर चढ़ाया जा रहा है, नैतिक मूल्यों व मानवीय सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही है। प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब माता ही फैशन की पुजारी हो और बाप पश्चिम सभ्यता का आदी हो तब बच्चों में श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, वात्सल्य, सेवा, सरलता, ममता आदि के संस्कार कहाँ से आयेंगे? किसी कवि ने कहा है-

''कुत्सित अपराधों की आँधी, किस सीमा तक जायेगी,
इस आँधी में तो स्वदेश की संस्कृतियाँ मर जायेंगी ।''
ओ देश के पहरेदारों, रोको इन तूफानों को,
बचा सको तो अभी बचा लो, भटक रही सन्तानों को।।

एक समय था जब संसार के अधिकतर देश अविकसित व पिछड़े कहलाते थे, तब हमारा भारत वर्ष देश सोने की चिड़िया व विश्व का आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाना जाता था और देश इतना समृद्धशाली था कि देश में घी व दूध की नदियाँ बहती थीं।''वसुधैव कुटुम्बकम्'' और ''आत्मवत् सर्व भूतेषु'' का उद्घोष पश्चिमी सभ्यता के उदय से पहले भारत में हुआ था। विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारी समृद्धि, सभ्यता, स्वाभिमान, संस्कृति को तार-तार करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी। दुःख इस बात का है कि इंग्लैण्ड के महान कूटनीतिज्ञ लार्ड मैकाले की कूटनीतिज्ञ चालों में फँसकर हम अपनी महान प्राचीन संस्कृति व सभ्यता को छोड़कर दुःखी और परेशान हो गये। लार्ड मैकाले ने सन् 1835 में इंग्लैंड की पार्लियामेन्ट में कहा था ''मैं भारत में घूमा, मुझे कोई गरीब भिखमंगा नहीं मिला। इस देश के सांस्कृतिक मूल्य ऐसे हैं कि उन्हें कोई जीत नहीं सकता। हमें इन लोगों को अपनी शिक्षा पद्धति के माध्यम से अपनी ओर आकर्षित करना पड़ेगा, तभी हमें कामयाबी मिल सकती है।'' अपनी प्राचीन

संस्कृति, मानवीय मूल्यों, सभ्यता, परस्पर प्रेम, सद्‌भावना, सहयोग को छोड़कर पाश्चात्य जगत की भौतिकवादी संस्कृति के दल-दल में फँसकर पिता-पुत्र, सास-बहू, भाई-बहन, भाई-भाई आदि में आपस में प्रेम, सहयोग, सद्‌भावना, वात्सल्यता, अध्यात्मिकता, भाई-चारे व दुखियों के दुख दूर करने आदि की भावनाएँ दिन-दिन कम होने के कगार पर पहुँच रहीं हैं। टी.वी. और इंटरनेट की रंगीन एवं आर्कषक दुनिया ने युवा पीढ़ी को अपना दीवाना बना दिया है, जिनसे जीवन रचनात्मक बनने के बजाय हिंसात्मक बनने के अधिक अवसर रहते हैं। बच्चा जब किशोर अवस्था जैसी संवेदनशील एवं नाजुक वय संधि में प्रवेश करता है तो इस उम्र का सारा ज्ञान न तो घर के माता-पिता देते हैं और न स्कूल, कालेजों में शिक्षक, प्रोफेसर। आज का युवा वर्ग सिगरेट, ड्रग्स, शराब, मनोरंजन क्लबों आदि में अधिक रुचि ले रहा है और आकर्षित भी। सुसंस्कारित मानव ही विपदाओं, संकटों और प्रतिकूलताओं में भी अनुकूलता के साथ जीना जानता है और कभी घबराता भी नहीं है। भील बालक एकलव्य ने अपने संस्कारों के बल पर ही मिट्टी के गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति से वह सब कुछ पा लिया, जो राजपुत्र कौरव और पाण्डव असली गुरु द्रोणाचार्य से पा नहीं सके। परमात्मा भी उसी की सहायता करता है, जो अपनी सहायता स्वयं करता है। हजारों जन्मों के कुसंस्कारों और कर्मों को मिटाना और रूपान्तरण करना भी केवल मनुष्य योनि में ही सम्भव है। धर्म और प्राचीन संस्कारों के प्रति उदासीनता के कारण आज की युवा पीढ़ी कुसंगति में पढ़कर उग्र स्वभाव वाली हो रही है, नशे और भोग-विलास की लत में पड़कर अपनी औरअपने परिवार वालों के सुख-शांति को नष्ट करके विकृति की ओर अग्रसर हो रही है। किसी कवि ने अपने हृदय की व्यथा को प्रकट करते हुए कहा है-

''पश्चिम की आँधी चली, पूरब के आकाश,
नष्ट सभ्यता हो गई, ऐसा हुआ विनाश ।
ध्वस्त सभ्यता हो गई, अस्त हुए संस्कार,
भूल गई अब पीढ़ियाँ, सब आचार-विचार।।''

सत्संग से विवेक की प्राप्ति होती है और जीवन सुधरता है, जबकि कुसंगति से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, जीवन की सुख-शान्ति नष्ट हो जाती है और तनाव ग्रस्त बन जाता है। सदाचार से मनुष्य की आयु, लक्ष्मी बढ़ती है तथा लोक-परलोक में कीर्ति की प्राप्ति होती है। महात्मा गाँधी जी का कथन है कि धर्म से रहित विद्वान अंधा है तथा विज्ञान से रहित धर्म पंगु है। वस्तु का गुण ही उसका धर्म है। जो कि तर्क सम्मत और विज्ञान सम्मत भी है। वास्तव में जो पदार्थ जैसा है उसका वैसा ही जानना, मानना और पहिचानना ही धर्म है। धर्म और विज्ञान में परस्पर कोई विरोध नहीं है। विश्व के महान वैज्ञानिक आईन्सटीन ने कहा है ''हम लोग केवल सापेक्ष सत्य को ही जान सकते हैं, परन्तु सम्पूर्ण सत्य को केवल सर्वज्ञ (विश्व दर्शी) ही जान सकता है'' भगवान महावीर का कथन है कि ''स्वार्थ जितना बढ़ेगा, क्रूरता भी उतनी बढ़ेगी। देश के लिए वही अर्थशास्त्र उपयोगी है, जिसमें गरीबी तो मिटे और साथ-साथ हिंसा का वर्द्धन भी न करे।''

विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका

कु. आराधना जैन

विश्व शान्ति मानव जाति के आस्तित्व, विकास एवं प्रगति हेतु अत्यन्त आवश्यक है। **क्विंसी राईट के अनुसार** – शान्ति किसी समाज की वह अवस्था है, जिसमें आन्तरिक रूप से इसके सदस्यों तथा बाह्य रूप से इसके अन्य समुदायों के साथ सम्बन्धों में व्यवस्था तथा न्यास का बोलबाला हो। **सुगतदास के अनुसार** – सामाजिक तथा न्याय विकास की प्रक्रिया को भावात्मक शान्ति कहा जा सकता है।.........शान्ति का रचनात्मक व भावात्मक स्वरूप है समाज व मनुष्य का समग्र विकास, एकता, सहयोग और स्थिरता। इसलिए एक तरफ तो समाज में हिंसा व शोषण रुकना चाहिए, जबकि दूसरी तरफ मनुष्य व समाज का समग्र विकास भी होना चाहिए। यही शान्ति का समग्र रूप है। शान्ति का केन्द्र मानवीय मस्तिष्क है, इसलिए अन्तिम रूप से शान्ति व्यक्ति को अनुभव होनी चाहिए। एक व्यक्ति जब शान्ति की अवस्था में होगा, तब वह केवल अवरोधी व तनावों से ही स्वतंत्र नहीं होगा, वरन् भावात्मक रूप से संतुष्टि व आनन्द का भी अनुभव करेगा इसलिए शान्ति का न्यूनतम रूप है प्रत्यक्ष और संरचनात्मक हिंसा का अभाव और अधिकतम रूप है पूर्ण शान्ति।

एक कवि ने विश्व की गम्भीर और अशान्त स्थिति पर विचार करते हुए लिखा है कि –

जान पड़ता है सब संकट विसार कर,
मानव है नाश के कगार पर,
जागी है उसमें पाश्विकता, बधिकता,
देखता नहीं है, कुछ वृद्ध बाल,
सबके लिए है काल,
दस्यु सम घात में है खड़ा,
लज्जा नहीं आती है, आत्मा के हनन की।

सचमुच सम्पूर्ण विश्व का वातावरण अशान्त है, मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है। मानव के द्वारा मानव का और राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण पूँजीवादी और साम्राज्यवाद को जन्म दे रहा है। साथ ही अपने सम्पर्की अन्य शक्तिहीन और छोटे राष्ट्रों को भी अपनी शक्तियों की सहायता प्रदान करते हुए उन्हें दूसरे राष्ट्रों के प्रति उकसाने या उभाड़ने की कोशिश में बराबर लगे रहते हैं। राष्ट्रों की होड़ से सम्पूर्ण संसार में हिंसा तथा स्वार्थ का अखण्ड ताण्डव नृत्य हो रहा है। विज्ञान इस दिशा में मानव को अज्ञात और अनिश्चित दिशा की ओर खींचे लिये जा रहा है। इस प्रकार से आज सम्पूर्ण विश्व कई भागों में बँटा हुआ परस्पर विनाश के गर्त में पहुँचने के लिए नित्य उद्योग करते हुए परिलक्षित हो रहा है। दूसरी ओर वहीं शान्ति और सहयोग की दिशा में भी पग उठाये जा रहे हैं। ऐसे साधनों की खोज की जा रही है

जिनसे विषमताओं से मुक्ति मिल सके। विश्व न्याय पूर्ण शान्ति की गोद में रहना चाहता है। **रामधारीसिंह दिनकर** कहते हैं –

न्याय शान्ति का प्रथम न्याय है, जब तक न्याय न पाता।
जैसे भी हो भवन शान्ति का, सुदृढ़ नहीं रह पाता ।।

शान्ति जीवन का सबसे बड़ा वैभव है तथा अशान्ति सबसे बड़ा शत्रु। शान्त मन नंदन वन होता है तो अशांत मन नरक की वैतरणी सम होता है। यदि शान्ति है तो अल्प साधन भी जीवन को आनन्द से भर देते हैं लेकिन अशांति में समस्त वैभव भी बेकार लगने लगता है। शान्ति से ही जीवन की सफलता के द्वार खुलते हैं। विष तो यद्यपि बहुत हो चुका है फिर भी अमृत की धाराएं प्रवाहित करने की आवश्यकता है। राष्ट्रों एवं विश्व मानवता पर जब कभी संकट के तेजाबी बादल छाए हैं युवा शौर्य ने ही प्रचंड प्रभंजन बनकर उन्हें छिन्न–भिन्न किया है।

युवा शक्ति वह शक्ति है जो किसी राष्ट्र का भविष्य और मेरूदण्ड है। असम्भव को सम्भव बनाने, अमूर्त को मूर्त करने तथा अकल्पनीय को साकार करने का जो सामर्थ रखते हैं वे युवा हैं। संवेदना और साहस की सघनता में युवा शक्ति प्रज्ज्वलित होती है। जहाँ भाव छलकते हों और साहस मचलता हो, वहीं यौवन के अंगारे शक्ति की धधकती ज्वालाओं में बदलने के लिए तत्पर होते हैं। विपरीतताएँ इसे प्रेरित करती हैं, विषमताओं से उत्साह मिलता है। समस्याओं के संवेदन इसमें नई ऊर्जा का संचार करते हैं।

आज विश्व में जो उन्नति, खुशहाली और प्रगति है इसके मूल में युवाओं का पुरुषार्थ व जुझारुपन है। आज चाहे खेल का क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो, औद्योगिक, आध्यात्मिक, धार्मिक व सामाजिक आदि क्षेत्र हों सभी में युवा वर्ग आगे है। युवाओं के पास अपार सम्भावनाएं हैं और वे कुछ भी कर सकने में समर्थ हैं। युवा भविष्य के निर्माता हैं । समृद्धि, प्रगति सच्चरित्रवान युवाओं पर निर्भर करती है। युवा जितने कर्मठ, मेहनती, सहनशील, सेवाभावी, संस्कारवान, कर्तव्यनिष्ठ, अधिकारों के प्रति सचेत, विवेकवान, दयावान, करुणा, प्रेम से ओतप्रोत, संकल्पशील, निस्वार्थी, संतुष्ट रहने वाला होगा प्रगति उतनी अधिक करेगा।

दुनिया की कोई भी क्रांति बिना युवाओं के सम्पन्न नहीं हुई। स्वतंत्रता संग्रामों में भाग लेने वाले अधिकांश युवा ही रहे हैं। आज विश्वभर में आतंकवाद, दहेजप्रथा, कन्याभ्रूण हत्या, बेरोजगारी, हिंसा, व्याभिचार, अनैतिकता आदि अपना साम्राज्य फैला रही हैं। ऐसे में युवा शक्ति अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से समुन्नत कर विश्व में शांति ला सकते हैं क्योंकि युवाओं में जोश होता है उन्हें होश पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है जिससे वे हतोत्साहित न हों बल्कि अपने सद्‌गुणों से सूर्य के प्रकाश की भाँति सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करते रहें।

क्रमशः ....

गुरुदेव का जयपुर चातुर्मास और प्रभावना

गुरुदेव जहाँ पर जाते हैं, इतिहास नया रचाते हैं।
ज्ञान की वर्षा करते हैं, धर्म की गंगा बहाते हैं ।।

पूज्य गुरुदेव आर्जवसागर जी महाराज गुरुपूर्णिमा के दिन कोटपूतली पधारे। वहाँ कुचामनसिटि, तिजारा, रेनवाल, गुड़गाँव, दिल्ली, जयपुर और भी काफी जगह से लोग मुनिश्री की पूजा करने और पावन चातुर्मास के लिए निवेदन करने गए। हर श्रावक धर्म लाभ प्राप्त करना चाहता था उसकी यही अभिलाषा थी कि मुनिश्री का चातुर्मास उनके शहर में हो परन्तु यह पुण्य प्राप्त हुआ जयपुर के श्रावकों को।

जयपुर शहर गर्मी में झुलस रहा था वर्षा नहीं हो रही थी ऐसे में जब महाराज श्री जयपुर की तरफ विहार करने लगे तो एक आनंद और श्रद्धा की लहर हर श्रावक के मन में उठने लगी गुरु के तप और त्याग के प्रभाव से प्रतिदिन वर्षा होने लगी, प्रकृति में शीतलता व शांति की हरियाली छा गई।

दिनांक 29.7.2010 को गुरुदेव शिवजी गोधो की जैन नसियां में प्रातः 9 बजे पहुँचे उनके साथ अपार श्रावक समूह जय-जयकार के मंगल उद्घोष करते हुए आ रहे थे। जयपुर के गायत्री नगर, कीर्ति नगर, व महावीर नगर के लोग अपनी अलग-अलग व्यवस्था लेकर चल रहे थे दोनों ही चाहते थे कि महाराजश्री उनके यहां चातुर्मास करें किन्तु यह पुण्यलाभ कीर्तिनगर वालों को प्राप्त हुआ। लोग भक्ति भाव से गुरु दर्शन कर स्वयं का जीवन धन्य मान रहे थे।

जयपुर शहर के इतिहास में पहली बार वर्षायोग हेतु रत्नत्रयधारी मुनि श्री आर्जवसागर जी लोगों की अज्ञानता दूर कर उनके अंदर ज्ञान की ज्योति जलाने आए हैं। शाम 4 बजे मुनिश्री का विहार हुआ हजारों की संख्या में श्रावक श्राविकाएं मंगल गीत गाते हुए चल रहे थे जौहरी बाजार से लेकर प्रमुख शहर के मनिहारों के रास्ते तक सम्पूर्ण रास्ता ही जाम हो गया लोग अपने-अपने घर के आगे पाद प्रक्षालन व आरती के लिए खड़े थे ऐसा लग रहा था मानो चतुर्थकालीन किसी तीर्थंकर का समोशरण चल रहा है।

दूसरे दिन 30.7.2010 को गुरुदेव प्रातः 6 बजे अपार श्रावक समूह के साथ कीर्तिनगर की तरफ विहार करने लगे रास्ते में हर प्राणी उनके दर्शन कर स्वयं को धन्य मान रहा था। अनेक श्रावक श्राविकाएं पीले वस्त्र पहने गुरु के पाद-प्रक्षालन व आरती के लिए खड़े थे। कई लोग गुरु दर्शन के लिए काफी दूर-दूर से आ रहे थे। 9 बजे विशाल जुलूस कीर्ति नगर पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गया।

31 जुलाई को प्रातः 7.30 बजे पावन वर्षायोग के मंगल कलश की स्थापना हुई। कीर्तिनगर का

जैन मंदिर पूरा का पूरा श्रावकों की भीड़ से भर गया कई श्रावक-श्राविकाएं बाहर खड़े होकर धर्म लाभ प्राप्त कर रहे थे। भक्तों ने चार्तुमास कलश पाँच भागों में विभक्त किया। रत्नत्रय कलश श्रेष्ठी श्री गणेश जी राणा सपरिवार ने लिया जबकि धर्म प्रभावना कलश श्री अरूण काला व पत्नि आशा (पार्षद) ने लिया, अतिथी सत्कार कलश महावीर सुनील काला ने प्राप्त किया जबकि वात्सल्य व सौभाग्य कलश को प्राप्त करने का सौभाग्य रतनचन्द जी सौगानी व ताराचन्द जी को क्रमशः मिला। कलश की स्थापना होते ही इन्द्र देव भी प्रसन्न होकर जल वृष्टि करने लगे। श्रावक इतने ज्ञानी, ध्यानी, तप, त्याग और संयम से परिपूर्ण गुरुवर को पाकर भक्ति व श्रद्धा से नतमस्तक हो गए।

जब से मुनिश्री जयपुर पधारे हैं तब से लेकर आज तक उनके तप और त्याग के प्रभाव से प्रतिदिन वर्षा हो रही है शहर में पानी की कमी पूरी हो गई। कोई व्यक्ति यदि एक बार मुनिश्री के प्रवचन सुन लेता है तो वह प्रतिदिन उनके प्रवचन सुनने से वंचित नहीं रहता। बच्चों की पाठशाला भी शाम को चलती है जिसमें उन्हें धार्मिक शिक्षा दी जाती है। रविवार के दिन दोपहर को भी मुनिश्री के विशेष प्रवचन होते हैं।

रक्षाबंधन के दिन से षोडशकारण महापर्व शुरू हो गया इसमें करीब सौ से भी अधिक श्रावकों ने भाग लिया है और प्रतिदिन कीर्तिनगर के जैन मंदिर में संगीतमय सामूहिक पूजा करते हैं इसके बाद महाराजश्री का प्रवचन सुनते हैं। प्रवचन के उपरान्त गुरुवर आहार चर्या को जाते हैं कई श्रावक महाराजश्री को आहार देकर व कई श्रावक आहार बेला के उपरान्त सामूहिक आहार करते हैं। लोगों के जीवन में त्याग और संयम की साधना चल रही है।

इस पावन वर्षायोग का आनंद कुछ और ही लगता है, षोडशकारण, दशलक्षण पर्व उसमें गुरु का समागम, सोने में सुहागा जैसा बहुत ही अच्छा लगता है। गुरुवर के द्वारा दी गई ध्यान की साधना पर दिये जा रहे प्रवचन भी अपूर्व हैं। जितना कहें उतना ही कम है।

दृष्टि बदली, सृष्टि बदली, बदल गया जीवन।
रत्नत्रय के धारी गुरुवर, बारम्बार नमन ।।

किसी व्यक्ति की कोई वस्तु जो डिब्बे अलमारी या कागज आदि के अन्दर बंद है उसे बिना अनुमति के खोलकर नहीं देखना चाहए क्योंकि ऐसा करना चोरी के दोष का कारण है।

रास्ते पर चले समय योग्य रास्ते से बायीं तरफ से (अपने बायें हाथ की तरफ से) न अधिक तेज और न अधिक धीमी चाल से तथा न बार-बार पीछे मुड़कर देखते हुए दया की भावना साथ चलना चाहिए।

कमण्डल दुनिया को जल का महत्व सिखाता है-

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

बीना बारह/ जैन मुनियों का कमण्डल दुनिया को मितव्यता की सीख देता है। कमण्डल में भरे हुए जल की प्रत्येक बूँद का समुचित उपयोग हेतु एक पतली टोंटी लगी होती है। जिसके द्वारा उतना ही जल निकाला जाता है जितना आवश्यक होता है। जीवन में भी उतना ही धन अर्जित किया जाना चाहिए जितना जरूरी है अनावश्यक धन संग्रह अशांति का कारण है। जहां माया देवी की अधिकता होगी वहां शांति देवी ठहर नहीं सकती। जीवन में शांति पाने के लिये मायादेवी और शांतिदेवी का धर्म के कांटे पर संतुलन बनाना अनिवार्य है।

उपरोक्त विचार संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अतिशय क्षेत्र बीना बाराह में चले पावन वर्षा योग के दौरान बनाये गये विशाल पंडाल में अभिव्यक्त किए। इसके पूर्व देश भर से आये हजारों भक्तगणों ने जयकारों के उद्घोष के साथ आचार्य श्री को श्रीफल अर्पित किए। मंगलाचरण उपरांत कुण्डलपुर के बड़ेबाबा एवं शांतिनाथ भगवान के चित्रों का अनावरण कर ज्ञान ज्योति का प्रज्जवलन करने का सौभाग्य न्यायाधीश गोधा ने प्राप्त किया। इस अवसर पर विचार मंच सागर की पहल पर एक गरीब बच्ची खुशी रैकवार जिसके हृदय में छेद एवं आहार नली फेफड़े से जुड़ी थी, उसके सफल आपरेशन के पश्चात पूर्णरुपेण स्वस्थ्य हो जाने के पश्चात समाज के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ज्ञातव्य है कि विचार संस्था द्वारा निकाली गई बच्ची के आपरेशन के आर्थिक सहयोग की अपील को अखबारों एवं इंटरनेट के माध्यम से जानकर म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की धर्मपत्नी साधना सिंह ने अपनी व्यक्तिगत रुचि लेकर बच्ची का सफल आपरेशन दिल्ली की एस्कार्ट अस्पताल में करवाया था। विचार मंच के उपाध्यक्ष शफीक खान ने कहा कि यह एक किसी चमत्कार से कम नहीं है कि उस बच्ची की जान बचाने के लिये मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी स्वयं ही आगे आई क्योंकि इस अभियान का प्रारंभ आचार्य श्री के मंगल स्मरण के साथ किया गया था। उन्होंने कहा कि गुरुदेव चमत्कार नहीं करते किंतु चमत्कार स्वतः ही हो जाते हैं। विचार संस्था से आत्मीयता के साथ जुड़े सुनील वेजीटेरियन ने कहा कि दुनिया पर विचारों की शक्ति से कुछ भी सम्भव है। इसके अलावा विचार मंच द्वारा एक महिला हेल्पलाइन नं. 9926970974 तथा विचार पत्रिका के 9 वे अंक विमोचन किया गया। विमोचन का सौभाग्य क्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष महेन्द्र बजाज के साथ कमेटी के पदाधिकारियों ने किया तथा महिला हेल्प लाइन ग्लोबल का विमोचन श्रीमती उषा बजाज ने किया। इस अवसर पर विचार संस्था के द्वारा देश के जाने माने दानवीर अशोक पाटनी, किशनगढ़, संजय मेक्स, इंदौर एवं मनीष नायक, दमोह का

शॉल श्रीफल भेंट कर उनकी उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिये सम्मान किया गया। अतिथियों का सम्मान विचार संख्या के वरिष्ट सदस्य डॉ. महेश जैन, शफीक खान, कल्पना राय, सुनील वेजीटेरियन, संजीव शाकाहारी, नरेन्द्र संस्कार आदि ने किया। इस मौके पर क्षेत्र कमेटी की ओर से प्रभावशाली ढंग से अपील करते हुए शफीक खान के आव्हान पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने दिल खोल कर शांति धारा दुग्ध योजना के लिये दान दिया।

सुनील वेजीटेरियन, दमोह

कीर्ति नगर, जयपुर चातुर्मास के आगामी भव्य कार्यक्रम

कवि सम्मेलन (2 से 3 अक्टूबर 2010) : 2 अक्टूबर 2010 को धार्मिक कवि सम्मेलन मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य एवं कवि डॉ. नरेन्द्र जैन के निर्देशन में तीन सत्रों में सम्पन्न होगा। जिसमें कविगण (अबालवृद्ध) अपनी स्वरचित धार्मिक कविताएँ प्रस्तुत करेंगे और यह कवि सम्मेलन प्रात: 8 बजे से प्रारम्भ होकर 10 बजे तक, मध्यान्ह में 2 से 4.30 बजे तक चलेगा। इन दोनों सत्रों के अन्त में मुनिसंघ की कविताएं सुनने का सौभाग्य मिलेगा। रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक मुनिसंघ की अनुपस्थिति में भी कवि सम्मेलन होगा तथा अन्त में कवियों का सम्मान समारोह सम्पन्न होगा।

3 अक्टूबर 2010 को प्रात: 8 बजे से सायं 4 बजे तक धार्मिक पाठशालाओं से उपस्थित हुए विद्यार्थियों के द्वारा अपने कोर्स से संबंधित विषय, सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किए जाएंगे। प्रत्येक ग्रुप के लिए 10 से 15 मिनट का समय सुनिश्चित किया गया है। तदुपरांत मुनिश्री का उद्बोधन होगा। मध्यान्ह 12.30 बजे से 1.30 बजे तक विद्वानों पं. मूलचंद ही लुहाड़िया, किशनगढ़ व डॉ. अजित जैन, भोपाल द्वारा पाठशाला के सुचारू रूप से चलाने हेतु मार्गदर्शन दिये जावेंगे। जिसमें बच्चों के साथ उनके शिक्षक-शिक्षिकाओं और कमेटी की उपस्थिति अनिवार्य होगी। तदुपरांत सभी को पुरुस्कृत एवं सम्मानित किया जावेगा।

जैन सिद्धांत विद्वत संगोष्ठी : 18 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2010 तक जैन सिद्धांत विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न की जावेगी जिसमें जैन सिद्धांत प्रवेशिका की वाचना द्वारा उसका आगम ग्रंथों के आधार से प्रमाणिकता पूर्वक संशोधन कार्य अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् के तत्वाधान में सम्पन्न होगा। जिसमें निम्न विद्वानों को आमंत्रित कर उनका मार्गदर्शन लेकर कमेटी द्वारा सम्मानित किया जावेगा :-

(1) डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत (2) डॉ. शीतल चंद जैन, जयपुर (3) पं. शिवचरण लाल जैन, मैनपुरी (4) ब्र. जयकुमार जैन निशांत, टीकमगढ़ (5) पं. मदनलाल जी काला, जयपुर (6) पं. महेश शास्त्री, सांगानेर (7) डॉ. ब्र. राजेन्द्र जैन, प्राकृत विभाग, जयपुर (8) ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर (9) पं. विनोद जैन, रजवांस (10) डॉ. सुधीर जैन, भोपाल (11) डॉ. संजय जैन पथरिया

दिनांक 25 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2010 तक कण्ठपाठ प्रतियोगिता सम्पन्न होगी जिसमें बिना देखे निम्न विषयों पर अपनी आयु के अनुसार विषयों पर आगम पाठ सुनाकर प्रतियोगीगण सम्मानित होंगे।

पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम (7 नवम्बर 2010) : कण्ठपाठ प्रतियोगिता का सम्मान एवं पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम दिनांक 7 नवम्बर 2010 को मध्यान्ह 2 बजे से सम्पन्न होगा। जिसमें प्रत्येक कण्ठपाठ के प्रत्येक विषय के लिए योग्यतानुसार प्रतियोगी के लिए प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरुस्कृत किया जावेगा तथा मुनिसंघ का पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम संयम लेने वालों के कर कमलों से सम्पन्न होगा। तदुपरांत मुनिश्री का उद्‌बोधन व अतिथि सत्कार कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

26 सिंतबर 2010 से रात्रि 7.40 बजे से 8 बजे तक प्रतिदिन मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के पावन प्रवचन पारस चैनल पर

24 सितम्बर को पूरे राजस्थान के लिए पारस चैनल का मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य में भव्य शुभारम्भ हुआ। पारस चैनल विश्व की प्राचीनतम जैन संस्कृति पर आधारित भारतवर्ष का 24 घंटे का सैटेलाइट चैनल अहिंसा के जयघोष हेतु उपलब्ध है। इस चैनल पर धार्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत मुनिसंघों (विशेष तौर पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज) के पावन प्रवचन, आहार-विहार, अन्य विशेष कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया जाता है। उक्त चैनल 24 घंटे केवल धार्मिक कार्यक्रम प्रसारित कर उपलब्ध करवाता है। यह चैनल वीडियोकोन के डी टू एच के चैनल नं. 681 पर उपलब्ध है। पारस चैनल का आजीवन सदस्यता शुल्क केवल 11,000/- है। सदस्यों को वीडियोकोन का मुफ्त डिश एन्टीना कनेक्शन, पारस एवं अन्य चैनल हेतु देकर साथ ही अनेक आकर्षक लाभ उपलब्ध है। विस्तृत जानकारी हेतु बेवसाईट www.paraschannel.com व email : paraschannel2010.com अथवा राष्ट्रीय डायरेक्टर श्री पंकज जैन मो.: 09312506419 तथा 09718839708 पर संपर्क कर सकते हैं।

गणितीय जैन कर्म सिद्धांत पर प्रकाशित ग्रंथावलि

(भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी [INSA, NEW DELHI] के प्रोजेक्ट्स से संरचित)

प्रोफेसर लक्ष्मीचंद्र जैन, जबलपुर द्वारा INSA, PROJECTS द्वारा कार्यान्वित किये गये जैन धर्म के ''कर्म सिद्धांत'' विषयक प्रकाशित ग्रंथ उपलब्ध हैं। इन ग्रंथों में 2300 वर्षों **(दीक्षित सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य [प्रभाचंद्राचार्य एवं उनके गुरु श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहुस्वामी] से लेकर पंडित टोडरमलजी तक)** का दिगंबर जैनागम करणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग विषयक ग्रंथों **(त्रिलोकप्रज्ञप्ति, त्रिलोकसार, जयधवल, धवल, महाधवल, षट्खंडागम, कषाय प्राभृत, गोम्मटसार, लब्धिसार, क्षपणासार आदि)** के गणितीय स्वरूप की प्राचीन-अर्वाचीन प्रतीकयुक्त संबंधित सामग्री को आधुनिक गणितीय व अंग्रेजी भाषा में विविध खंडों में प्रस्तुत किया गया है जो कि निम्न प्रकार है :-

क्रं.	विषय	मूल्य
1.	The Tao of Jaina Sciences (New Revised Edition 2009) [जैन विज्ञानों का मार्ग]	500/-
2.	Exact Sciences in the Karma Antiquity Vol. I [त्रिलोकप्रज्ञप्ति]	2000/-
3.	Exact Sciences in the Karma Antiquity Vol. II [त्रिलोकसार]	2000/-
4.	Exact Sciences in the Karma Antiquity Vol. III [लोकविभाग एवं जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति संग्रह]	2000/-
5.	Exact Sciences in the Karma Antiquity Vol. IV [परिशिष्ट एवं विविध]	1000/-
6.	Mathematical Sciences in the Karma Antiquity Vol. I [गोम्मटसार-जीवकांड]	2000/-
7.	Mathematical Sciences in the Karma Antiquity Vol. II [गोम्मटसार-कर्मकांड]	2000/-
8.	Systemic Sciences in the Karma Antiquity Vol. I [लब्धिसार]	2000/-
9.	Systemic Sciences in the Karma Antiquity Vol. II [क्षपणासार] And Vol. III Index/References, Appendices & Miscellaneous [परिशिष्ट एवं विविध]	In Press

कृपया उपरोक्त सामग्री की प्राप्ति एवं शोध संबंधित जानकारी हेतु संपर्क करें :-

श्री चक्रेश कुमार जैन, (सुपुत्र प्रोफेसर लक्ष्मीचंद्र जैन)
गुलाबरानी कर्म साईंस म्यूजियम
(पुराना पता : 554, सराफा, पुरानी बजाजी, जबलपुर)
1, देवयानी काम्प्लेक्स, जयनगर, गढ़ा रोड, जबलपुर
अथवा
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल मो. 9425601161

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, एफ 108/34, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

पं. सुरेश बजाज,
बजाज भवन, विवेकानन्द कालोनी,
छतरपुर (म.प्र.)

द्वितीय श्रेणी

किरण छावड़ा,
आदिनाथ कालोनी जयपुर रोड,
किशनगढ़-305801

तृतीय श्रेणी

श्रेष्ठ कुमार जैन
बस ऑनर, परवारी मुहल्ला
छतरपुर (म.प्र.)

उत्तर पुस्तिका - सितम्बर 2010

प्र. क्र. 1. हस्तिनापुर में 2. अयोध्याजी में
3. मांगीतुंगी गिरी से 4. हस्तिनापुर
5. हाँ 6. ना 7. हाँ 8. हाँ
9. पं. दौलतरामजी 10. कुमुदचन्द्राचार्य ने 11. अमृतचन्द्राचार्य
12. श्रावक के तीन शब्द श्र से श्रद्धावान अर्थात सम्यग्दृष्टि, व से विवेकवान अर्थात सम्यकज्ञानी तथा क से क्रियावान अर्थात सम्यकचारित्री से मोक्षमार्ग को समझाया जा सकता है।
13. दया 14. अरिहंत 15. पांच 16. मुनि
17. गलत (✕) 18. गलत (✕) 19. सही (✔) 20. सही (✔)

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन अंक 100

- ❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5–5 अंक समान हैं।
- ❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें –

प्र.1. सबसे कम गणधर कौन से तीर्थंकर के थे?
महावीर भगवान [ ] पार्श्वनाथ भगवान [ ]
नेमिनाथ भगवान [ ]

प्र.2. आठ हजार मुकुटधारी राजाओं का स्वामी कौन कहलाता है?
चक्रवर्ती [ ] मांडलिक [ ] महामांडलिक [ ]

प्र.3. महाभारत कौन–से तीर्थंकर के काल में हुआ?
नेमिनाथ [ ] मुनिसुव्रतनाथ [ ] पार्श्वनाथ [ ]

प्र.4. किसने शेर को जलेबी खिलाकर अहिंसक बनाया था?
गोपालदास बरैया [ ] बनारसी दास [ ] श्री अमरचंदजी [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये –

प्र.5. श्रेणिक राजा मुनि पर उपसर्ग के कारण नरक में गया? [ ]

प्र.6. आदिनाथ के समवसरण में प्रमुख श्रोता अर्ककीर्ति थे? [ ]

प्र.7. तीन द्रव्य असंख्यात प्रदेशी हैं? [ ]

प्र.8. स्वाध्याय अभ्यंतर तप में आता है? [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

प्र.9. तीर्थंकर प्रकृति का बंध .... होता है।
[दशलक्षण व्रत, सोलह कारण व्रत, रत्नत्रय व्रत]

प्र.10. सम्यग्दर्शन .... अंग से सहित होना चाहिए।
[दस, सात, आठ]

कृपया यहाँ से निकालें

प्र.11. सम्मेद शिखरजी पर हम लोग .... टोकोंपर दर्शन करते हैं
[सात, तीन, पच्चीस]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये -

प्र.12. साधु लोग वर्षायोग में एक स्थान पर क्यों रहते हैं।

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13. आस्त्रव के द्वार	-	नोकर्म आहार
प्र.14. शलाका पुरुष	-	108
प्र.15. केवली भगवान	-	18,000
प्र.16. शील	-	चतुर्थ काल

सही ( ) या ( ) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17. सीता का जीव सोलहवें स्वर्ग में है । [ ]

प्र.18. समवशरण में सभी तीर्थंकर पद्मासन में विराजमान होते हैं [ ]

प्र.19. परिषह बीस होते हैं। [ ]

प्र.20 गजकुमार स्वामी अंतः कृत केवली थे [ ]

प्रतियोगी-परिचय

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

भाव विज्ञान परिवार

✶✶✶✶✶ शिरोमणी संरक्षक ✶✶✶✶✶

दानवीर, किशनगढ़

✶✶✶✶ परम संरक्षक ✶✶✶✶

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✶✶✶ पुण्यार्जक संरक्षक ✶✶✶

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✶✶ सम्मानीय संरक्षक ✶✶

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर

✶ संरक्षक ✶

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, पूर्व अध्यक्ष जैन समाज, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र प्राचीन बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री इंदर कुमार जैन, जयपुर ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर

✶ आजीवन सदस्य ✶

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

गुना

श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, लक्तपुरावाले
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई वाले
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़ वाले
श्री राजीव बुखारिया

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा वाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा जैन ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला डोइया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला, श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छावड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सौगानी
श्रीमती अरूणा अमोलक काला

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छावड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोषी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छावड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायके
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी

श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, देह

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छावड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद जी सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांडया
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी

श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांडया
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांडया
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी

भाव विज्ञान परिवार

✷ आजीवन सदस्य ✷

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष,श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रूकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
अनुपमा जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी जैन धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला .... प्रदेश ....से **भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/-☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....

को शिरोमणी संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य
मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

षोडश कारण पर्व पर साहित्य विमोचन

तीर्थोदय काव्य का विमोचन करते हुए
अशोक साहबजाज, अजमेर का परिवार

भावविज्ञान व मुनिश्री के साहित्य विमोचन पर
उपस्थित इंजी. महेन्द्र जैन, भोपाल का अभिनंदन

भाव विज्ञान की सदस्यता स्वीकार करते हुए
दीपकराज (D.R.) जैन, मानसरोवर

सोलह कारण व्रत एवं तीर्थोदय काव्य स्वीकारते
हुए सुनील जौहरी, जयपुर

साहित्य विमोचन के समय पवन तेरा पंथी एवं
पं. विमल कुमार जैन, अशोका इलेक्ट्रीकल्स

श्रावक साधना संस्कार शिविर में तत्त्वार्थ सूत्र पर
प्रवचन देते हुए मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज

वर्षायोग स्थापना-2010 : कीर्ति नगर, जयपुर

वर्षायोग स्थापना पर
मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज

कमेटी द्वारा श्रीफल भेंट व वर्षायोग हेतु निवेदन

जयपुर नगर के गणेश राणा आदि विशिष्ट जनों
द्वारा वर्षायोग हेतु मुनिश्री से निवेदन

आचार्य श्री के चित्र का अनावरण करते हुए
गणेश राणा, राज. महासभा के अध्यक्ष

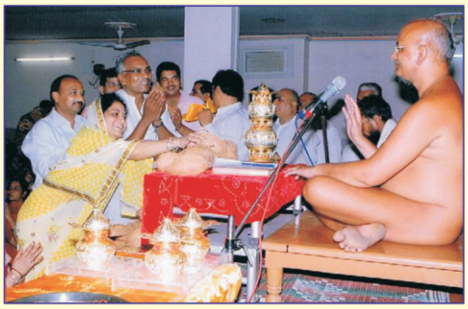

वर्षायोग स्थापना पर अजय दनगसिया, अजमेर व
संजीव शाकाहारी, दमोह आदि नमन करते हुए

वर्षायोग पर ब्र. जयकुमार निशांत का अभिवंदन
करते हुए महामंत्री वी.के. जैन, जयपुर

कीर्ति नगर, जयपुर में प.पू. मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का मंगल प्रवेश

मुनिश्री के साथ चल रहे हैं मदनलाल जी काला, महावीर कासलीवाल, भागचन्द जी, आदि

मुनिश्री के साथ हैं सुशिष्य क्षुल्लक हर्षितसागरजी महाराज एवं समाज के गणमान्यजन

मुनिश्री के साथ हैं महावीर पाण्डया, राजकुमार गोधा व मनीष जैन, आदि

मुनिश्री से आशीष लेते हुए श्रीपालजी कटारिया

कीर्तिनगर मंदिर के द्वार पर मुनि संघ की अगवानी करते हुए भक्तगण

रत्न प्रतिमाओं की स्थापना के समय मुनिश्री

वर्षायोग स्थापना-2010 : कीर्ति नगर, जयपुर

वर्षायोग स्थापना पर
बहनों द्वारा मंगल गीत प्रस्तुति

वर्षायोग प्रथम कलश
स्थापनकर्ता गणेश राणा जी

वर्षायोग द्वितीय कलश
स्थापनकर्ता अरूण काला

वर्षायोग तृतीय कलश
स्थापनकर्ता महावीर कासलीवाल

वर्षायोग चतुर्थ कलश
स्थापनकर्ता रतनचन्द सौगानी

वर्षायोग पंचम कलश
स्थापनकर्ता ताराचन्द जी बज

षोडश कारण पर्व एवं दशलक्षण शिविर की झलकियाँ

शिविर में उपस्थिति श्रावक-श्राविकागण

मुनिश्री के साथ शिविरार्थीगण

षोडशकारण में व शिविर में पूजन करते हुए शिविरार्थी

षोडशकारण व शिविर में पूजन करती महिलाएँ

मंच पर पूजन करते हुए अध्यक्ष महावीर कासलीवाल आदि

आचार्य विद्यासागर प्रवचन मंच मण्डप के उद्घाटन हेतु दानकर्ता श्री महावीर कासलीवाल, जयपुर

आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला (मुनिश्री की प्रेरणा से स्थापित) के बालक बालिका गण

पर्व दिनों में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

दीक्षा समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए तिजारा पाठशाला के बच्चे

मुनिश्री के साहित्य का विमोचन करते हुए

श्री सी. कुमार, तमिलनाडु का स्वागत करते हुए समिति के पदाधिकारी गण

श्री सुनील जौहरी, जयपुर का स्वागत करते हुए समिति के पदाधिकारी गण

मुनि श्री के प्रवचन के समय उपस्थित भक्तगण

मुनि श्री के प्रवचन के समय उपस्थित भक्तगण

पुण्यार्जक

सौजन्य से

श्रीमति दर्शनमाला ध.प. श्री मिट्ठनलाल जैन

श्रीमती मधु ध.प. प्रवीण कुमार जैन

मे. दादा देव फाइनेन्स एण्ड लीजिंग प्रा.लि.

WZ-2, मेन रोड, साध नगर, पालम कालोनी, नई दिल्ली-110045

मो.: 9810133481 फोन : 011-64530513

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)